



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 62]

नई दिल्ली, मंगलवार, अप्रैल 4, 2006/चैत्र 14, 1928

No. 62]

NEW DELHI, TUESDAY, APRIL 4, 2006/CHAITRA 14, 1928

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 4 अप्रैल, 2006

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य एवं यूक्रेन के मूल के अथवा वहां से निर्यातित विस्कस फिलामेंट यार्न के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच। अंतिम जांच परिणाम।

सं. 14/23/2004-डीजीएडी.—क. प्रक्रिया

1. नीचे उल्लिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने (जिसे एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है) उपर्युक्त नियमावली के अंतर्गत चीन जनवादी गणराज्य एवं यूक्रेन (जिन्हें सम्बद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित विस्कस फिलामेंट यार्न के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच की शुरुआत के बारे में दिनांक 7 अप्रैल, 2005 को एक सार्वजनिक नोटिस (शुरुआत अधिसूचना) की घोषणा की, जिसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया। घरेलू उद्योग की ओर से, जो उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादन का प्रमुख अनुपात प्रदर्शित करते हैं, मानव निर्मित फाइबर उद्योग एसोसिएशन (एएमएफआईआई) (याचिकाकर्ता) से प्राप्त याचिका के बाद पाटनरोधी प्रक्रिया शुरू की गई। याचिका में उपर्युक्त उत्पाद के पाटन के साक्ष्य एवं उससे हुई क्षति का ब्यौरा दिया गया था, जिसे इस प्रक्रिया की शुरुआत हेतु पर्याप्त औचित्य समझा गया।

(ii) शुरुआत से पहले ऊपर उल्लिखित नियम 5 के उप नियम (5) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा जांच की कार्यवाई शुरू करने से पहले सम्बद्ध देशों के भारत स्थित दूतावासों को आवेदक से पूर्णतः प्रलेखित आवेदन प्राप्त होने के बारे में सूचित किया गया।

(iii) ऊपर उल्लिखित नियम 6 के उप नियम (2) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा उक्त सार्वजनिक नोटिस की प्रति ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, आयातकों, उद्योग एसोसिएशनों, संबंधित देशों के दूतावासों और शिकायतकर्ता को प्रेषित की गई और उन्हें अपने विचार लिखित में प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया। शुरुआत नोटिस की प्रतियां व्यापक परिचालनार्थ, फिक्की, सीआईआई, एसोचैम आदि को भी भिजवाई गई।

(iv) ऊपर उल्लिखित नियम 6 के उप नियम (3) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा आवेदन की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों एवं सम्बद्ध देशों के भारत स्थित दूतावासों को भी उपलब्ध कराई गई । उपर्युक्त नियम 6 के उप नियम (4) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा संबंधित प्रश्नावली की एक-एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों तथा सम्बद्ध देशों के भारत स्थित दूतावासों एवं अन्य हितबद्ध पक्षों को भी उपलब्ध कराई गई । सम्बद्ध देशों के नई दिल्ली स्थित दूतावासों को जांच की शुरुआत की सूचना दी गई और उनसे उनके देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर निर्धारित अवधि में भजने की सलाह देने का अनुरोध किया गया ।

(v) अपेक्षित सूचना प्राप्त करने के लिए प्राधिकारी द्वारा प्रश्नावलियां सम्बद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को भिजवाई गई :

1. यिबिन ग्रेस कम्पनी लि., सिचुआन प्रांत, चीन जन. गण.
2. बाओडिंग स्वेन ग्रुप, बाओडिंग हेबेई, चीन जन. गण.
3. जिनजियांग बैलू केमिकल, हेनान प्रान्त, चीन जन. गण.
4. जिलिन केमिकल फाइबर ग्रुप कम्पनी लि., जिलिन सिटी, चीन जन. गण.
5. हैंगजाऊ बी. पी. केमिकल कम्पनी लि., हैंगजाऊ चीन जन. गण.
6. जे एस सी "चेरकासकोये", यूक्रेन- 1803

(vi) चार निर्यातकों/उत्पादकों ने निर्यातक प्रश्नावली और शुरुआत नोटिस का उत्तर भेजा ।

1. यिबिन ग्रेस कम्पनी लि., सिचुआन प्रांत, चीन जन. गण.
2. जिनजियांग हीस्ट फाइबर कम्पनी लि., चीन जन. गण.
3. जिनजियांग केमिकल फाइबर कम्पनी लि., चीन जन. गण.
4. मेसर्स एचएनईआई थ्रेड कम्पनी लि., चीन जन. गण.

(vii) आयातक प्रश्नावली सहित शुरुआत अधिसूचना निम्नलिखित आयातकों को भी भेजी गई :

1. शाह ट्रेडिंग कम्पनी, मुम्बई- 21
2. व्यापार कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज लि., मुम्बई-5
3. यश इन्टरप्राइजेज, मुम्बई- 19
4. डोरीवाला इण्डस्ट्रीज, सूरत- 395003
5. डोरीवाला इण्डस्ट्रीज, सूरत- 395003
6. मारवाड़ी ब्रदर्स, मुम्बई- 3
7. मेसर्स राजमहल सन्स एण्ड ग्रुप, सेलम- 2
8. मेसर्स चुन्नीलाल कुन्दनमल, सेलम- 2
9. मेसर्स शान्ति टेक्सटाइल्स, सेलम- 2
10. मेसर्स कृष्णन सेल्स कार्पोरेशन, बंगलौर- 560002

(viii) किसी भी आयातक ने आयातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया । तथापि, कतिपय आयातकों एवं प्रयोक्ता एसोसिएशनों ने शुरुआत अधिसूचना का उत्तर दिया और उन्होंने कुछ टिप्पणियां प्रस्तुत की हैं, जिन पर जांच के लिए सुसंगत होने के अध्यधीन, विचार किया गया है । निम्नलिखित आयातकों, उपभोक्ताओं व एसोसिएशनों ने शुरुआत अधिसूचना का उत्तर दिया :

1. हैण्डलूम एण्ड स्मॉल यूजर्स आर्ट सिल्क यार्न एसोसिएशन लिमिटेड
2. फेडरेशन ऑफ इण्डियन आर्ट सिल्क वीविंग इण्डस्ट्री (एफआईएसडब्ल्यूआई), सूरत
3. पण्डेसरा इण्ड. कोऑपरेटिव सोसायटी लि., सूरत

4. भिवण्डी टेक्सटाइल मैनुफैक्चर्स एसोसिएशन लि.
5. उधना ग्रुप वीवर्स प्रोड्यूसर्स कोऑपरेटिव सोसायटी लि.
6. सूरत रेयॉन टेक्सटाइल्स एक्सपोर्टर्स कोऑपरेटिव सोसायटी लि., सूरत
7. सेस्मी कोऑपरेटिव सोसायटी लि.
8. सूरत विणकर सहकारी संघ लि., सूरत
9. सूरत आर्ट सिल्क क्लॉथ प्रोड्यूसर्स कोऑपरेटिव सोसायटी लि., सूरत

तथापि, किसी भी आयातक ने आयातक प्रश्नावली के तहत अपेक्षित सूचना प्रस्तुत नहीं की है और इस प्रकार जांच में प्राधिकारी से सहयोग नहीं किया है।

(ix) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय पाठ सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखा था और इसे हितबद्ध पक्षों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया था।

(x) इस अधिसूचना के तहत **** हितबद्ध पक्षों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना प्रदर्शित करती है और नियमावली के अनुसार इसे प्राधिकारी ने इसे ऐसा माना है;

(xi) पाटन तथा क्षति की जांच में 1 जनवरी, 2004 से 31 दिसम्बर, 2004 की अवधि (जिसे जांच अवधि अथवा पीओआई भी कहा जाता है) शामिल की गई है। क्षति विश्लेषण के सन्दर्भ में जांच की प्रवृत्ति में पीओआई तथा इससे पूर्व तीन वर्ष की अवधि शामिल की गई।

(xii) सार्वजनिक सुनवाई नामित प्राधिकारी के तत्वावधान में 2 नवम्बर, 2006 को आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न हितबद्ध पक्षों को प्राधिकारी के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया गया था। उन्हें सार्वजनिक सुनवाई के दौरान प्रस्तुत तर्कों पर अपनी लिखित टिप्पणियां देने के लिए कहा गया और अन्य हितबद्ध पक्षों की लिखित टिप्पणियों के आधार पर उत्तर प्रस्तुत करने के लिए भी कहा गया। यहां यह उल्लेखनीय है कि आंकड़ों में भिन्नता होने, खास तौर से निर्यातकों की सम्बद्ध वस्तुओं के निर्यात मूल्य और भारतीय आयातकों द्वारा इन आयातों के संबंध में डीजीसीआई द्वारा दर्ज आंकड़े भिन्न होने के कारण सभी प्रमुख आयातकों, जिनके नाम डीजीसीआई के आंकड़ों में शामिल थे, से अनुरोध किया गया कि वे अपनी आयात संबंधी जानकारी आयातक प्रश्नावली में अपेक्षित प्रारूप तथा तरीके से प्रदान करें, जो जांच में बहुत सहायक सिद्ध होगी। तथापि, जिन आयातकों से प्राधिकारी ने अनुरोध किया था, उनमें से किसी ने भी अपेक्षित जानकारी प्रस्तुत नहीं की और इस प्रकार आयातकों ने प्राधिकारी से जांच में सहयोग नहीं किया।

(xiii) प्राधिकारी ने पाटन तथा परिणामकारी क्षति के अंतिम निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी प्रकार की जानकारी जो आवश्यक समझी गई, को प्राप्त करके सत्यापन किया। प्राधिकारी द्वारा, जहां तक आवश्यक समझा गया, घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की गई। निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के सत्यापन के लिए प्राधिकारी द्वारा फरवरी, 2006 में निर्यातक सत्यापन दौरा दिया गया। निर्यातकों को सत्यापन रिपोर्ट (गोपनीय) जारी की गई, जबकि इसकी अगोपनीय प्रति अन्य सभी हितबद्ध पक्षों के लाभार्थ सार्वजनिक फाइल में रखी गई। इस बीच, इस बात का अभिनिश्चय करने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग की क्षति दूर करने की दृष्टि से पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त रहेगा; याचिकाकर्ता द्वारा प्रदत्त सूचना के आधार पर सर्वोत्तम उत्पादन लागत की गणना हेतु घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का विश्लेषण किया गया और सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों के आधार पर भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के विनिर्माण एवं बिक्री की लागत की गणना भी की गई। 17 मार्च को एक प्रकटन विवरण जारी किया गया था और विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा की गई टिप्पणियों का उस सीमा तक विश्लेषण किया गया है जहां तक इस जांच में उन्हें संगत समझा गया है। यह नोट किया जाता है कि प्रकटन विवरण के बाद उत्तर देने वाले निर्यातकों, चीन

जनवादी गणराज्य के वाणिज्य मंत्रालय, चाइना चैम्बर्स ऑफ कामर्स फॉर इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट (सीसीसीटी), घरेलू उद्योग और मेसर्स फेडरेशन ऑफ इण्डियन आर्ट सिल्क बिबिंग इंडस्ट्री (एफआईएस डब्ल्यूआई), मुम्बई सहित विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों से टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं।

ख. विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद 150 डेनियर्स तक (जिसमें +4% तक अनुमत्य उतार-चढ़ाव शामिल है) विस्कस रेयॉन फिलामेंट यार्न है, जो सिलाई के धागों के अतिरिक्त है तथा इसमें 67 डेसिटेक्स से कम का मोनो फिलामेंट शामिल है, जिन्हें विस्कस फिलामेंट यार्न, वीएफवाई, रेयॉन फिलामेंट यार्न, आर्ट सिल्क यार्न, सेल्यूलोस यार्न, फ्लैट यार्न, माइक्रोफिलामेंट, माइक्रो यार्न, ट्विस्टेड यार्न, दोहरे/बहुविध प्लाई यार्न इत्यादि 100% विस्कस यार्नों से निर्मित सभी यार्न शामिल हैं।

3. जांच शुरू होने के उपरान्त फेडरेशन ऑफ आर्ट सिल्क वीविंग इण्डस्ट्री (मेसर्स एफआईएस डब्ल्यूआई), जो सम्बद्ध वस्तुओं उपभोक्ताओं और अन्य आयातकों का एक संगठन है, ने अभ्यावेदन प्रस्तुत किया कि प्रौद्योगिकी, उत्पाद को परिभाषित करने वाले विभिन्न मानदण्ड तथा टैरिफ शीर्ष लागू करके पीसीएम (उत्पाद नियंत्रण नामकरण) परिभाषित किया गया है, जो घरेलू उद्योग हेतु उपयुक्त है। उन्होंने प्राधिकारी से सम्बद्ध वस्तुओं के टैरिफ शीर्षों को स्पष्ट करने का अनुरोध किया और सुझाव दिया कि सभी हितबद्ध पक्षों को उत्पाद का दायरा स्पष्ट कर दिया जाए। उन्होंने प्राधिकारी से यह भी अनुरोध किया कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे से विभिन्न प्रकार की सम्बद्ध वस्तुओं, जो घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित नहीं की जाती, को हटा दिया जाए।

4. प्राधिकारी ने नोट किया है कि विस्कस रेयॉन फिलामेंट यार्न, प्राकृतिक नवीकृत किए जा सकने वाले संसाधनों अर्थात् लकड़ी की लुग्दी से उत्पादित एक पुनरुत्पादित सेल्यूलोसिक यार्न है। समान उत्पादन प्रौद्योगिकी, विनिर्माण प्रक्रिया, कच्ची सामग्री, संयंत्र एवं उपकरणों से विभिन्न प्रकार के वीएफवाई का उत्पादन किया जाता है जो समान प्रकार के सामान्य कार्य करते हैं। यद्यपि उत्पाद को प्रौद्योगिकी (सीएसवाई/पीएसवाई), डेनियर, चमक, रंग, ट्विस्टिंग, डबलिंग के अनुसार समूहों में बांटा गया है, परंतु विभिन्न प्रकार के वीएफवाई के बीच काफी अधिक प्रतिस्थापनीयता होने के कारण इन विभिन्न प्रकारों में वीएफवाई की समान मूल विशेषता होती है। संबद्ध वस्तुओं को सीमाशुल्क उपशीर्ष 54033100, 54033200, 54033300, 54034110, 54034120, 54034130, 54034140, 54034150, 54034160, 54034170, 54034180 तथा 54034190 के तहत वर्गीकृत किया गया है। हालांकि उनका अन्य अध्याय शीर्ष (जैसे अध्याय 55) के तहत भी आयात सूचित किया गया है। इस बात की परवाह किए बिना कि उनका आयात किस वर्गीकरण के तहत किया जा रहा है, विचाराधीन उत्पाद के संबंध में जांच की शुरुआत की गई है। सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है तथा किसी भी प्रकार से इन जांचों के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

5. विचाराधीन उत्पाद के दायरे के बारे में कतिपय हितबद्ध पक्षों द्वारा दिए गए तर्कों के संबंध में यह उल्लेखनीय है कि इस उत्पाद में वीएफवाई के सभी प्रकार शामिल हैं जब तक कि उन्हें विनिर्दिष्ट रूप से अलग न किया गया हो जैसे कि ट्विस्टेड, अनट्विस्टेड/चपटे उज्जवल/फीके/केबल (अथवा उसके प्रकार), रंगीन/रंगे गए (अथवा उसके प्रकार) जो विस्कस के सही आकार वाले यार्न हों अथवा नहीं, इसमें सीमाशुल्क उपशीर्ष 5403.10 (जिसकी संसक्ति 2.2 जीपीडी से अधिक है), के तहत वर्गीकृत किए जाने योग्य विस्कस के उच्च संभावित वाले यार्न, 5403.20 के तहत वर्गीकृत किए जाने योग्य विस्कस के टेक्सचर्ड यार्न, सीमाशुल्क उपशीर्ष 5502 के तहत वर्गीकृत किए जाने योग्य विस्कस रेयॉन टो, सभी नकली यार्न जिसमें विस्कस फिलामेंट

नहीं है अथवा जिसमें विस्कस फिलामेंट तथा अन्य का संयोजन है, शामिल नहीं है। जांच के दौरान प्रतिपक्षी हितबद्ध पक्षों ने फर यार्न, फायर रिटार्डन्ट यार्न, एयर टेक्सचराइज्ड यार्न तथा एम्ब्राइड्ड यार्न को जांच के दायरे से हटाने का अनुरोध किया। रिकार्ड की जांच के बाद प्राधिकारी ने यह पाया कि उत्तरदाता पक्षों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों में एम्ब्राइड्ड यार्न को छोड़कर इस प्रकार के यार्नों का आयात नहीं दर्शाया गया है। सम्बद्ध वस्तुओं के दायरे से एम्ब्राइड्ड विस्कस फिलामेंट यार्न को हटाने के बारे में कतिपय हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए दावे के संबंध में यह उल्लेखनीय है कि चूंकि एम्ब्राइड्ड यार्न का आयात सम्बद्ध देशों से किया गया है और क्षति की अवधि में घरेलू उद्योग द्वारा किसी समान वस्तु की पेशकश नहीं की गई, अतः एम्ब्राइड्ड यार्न को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखना उपयुक्त समझा गया। विस्तृत जांच के आधार पर इस प्रकार के यार्न को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखना अधिक उपयुक्त समझा गया।

6. कुछेक आयातकों एवं प्रयोक्ताओं ने यह सूचित किया है कि प्रौद्योगिकी के उपयोग के आधार पर उत्पाद की पहचान की जानी चाहिए क्योंकि घरेलू उद्योग द्वारा प्रयुक्त पारम्परिक ट्रफ स्पिनिंग प्रौद्योगिकी के स्थान पर आयातित सम्बद्ध वस्तुएं ट्यूब स्पिनिंग प्रौद्योगिकी से बनाई जाती हैं। यह भी बताया गया है कि प्रौद्योगिकी तथा कच्चे माल के आधार पर भी उत्पाद की पहचान की जानी चाहिए। प्राधिकारी के ध्यान में यह भी लाया गया है कि डेनियरेज, टिवस्टिंग, डाइंग, डोपिंग तथा अन्य प्रकार के मूल्य वर्धन के आधार पर भी मूल्यों में भिन्नता आती है, अतः उत्पाद के विकल्प की व्यवहार्यता संबंधी अनिवार्य प्रश्न का समाधान करना भी जरूरी है। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षों के इस तर्क की भी जांच की है और जांच के उपरांत यह पाया है कि विनिर्माण को विभिन्न प्रक्रियाओं अर्थात् लगातार कताई अथवा पॉट स्पिनिंग अथवा कच्चे माल के चुनाव जैसे लकड़ी की लुगदी अथवा कॉटन लिंटर से सम्बद्ध वस्तुओं की भौतिक, तकनीकी एवं रासायनिक विशेषताओं में परिवर्तन नहीं आता। इसके अलावा सम्बद्ध वस्तुएं विचाराधीन उत्पाद में यथाउल्लिखित विनिर्दिष्ट डेनियर के अनुसार अनेक अनुप्रयोगों में परस्पर परिवर्तनीय होती हैं और उनका उपयोग वही अथवा एकसमान होता है।

7. उपर्युक्त को देखते हुए यह उल्लेख किया जाता है कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद 150 डेनियर्स तक (जिसमें + 4% तक अनुमत्य उतास-चढ़ाव शामिल है) विस्कस रेयॉन फिलामेंट यार्न है, जो सिलाई के धागों के अतिरिक्त है तथा इसमें 67 डेसिटैक्स से कम का मोनो फिलामेंट शामिल है, जिन्हें विस्कस फिलामेंट यार्न, वीएफवाई, रेयॉन फिलामेंट यार्न, आर्ट सिल्क यार्न, सेल्यूलोस यार्न, फ्लैट यार्न, माइक्रोफिलामेंट, माइक्रो यार्न, टिवस्टेड यार्न, दोहरे/बहुविध प्लाई यार्न इत्यादि 100% विस्कस यार्नों से निर्मित सभी यार्न शामिल हैं। तथापि सम्बद्ध वस्तुओं में सिलाई का धागा, फर यार्न, फायर रिटार्डन्ट यार्न, इंजीनियर्ड यार्न, एम्ब्राइड्ड यार्न एवं एयर टेक्सचराइज्ड यार्न शामिल नहीं हैं।

ग. समान वस्तु

8. आवेदकों ने दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तु सम्बद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है। आवेदकों द्वारा उत्पादित वस्तु तथा सम्बद्ध देशों से निर्यातित वस्तु में कोई विशेष अन्तर नहीं है। जहां तक समान वस्तु का संबंध है, प्राधिकारी ने नोट किया है कि समान वस्तु का संबंध है; प्राधिकारी ने नोट किया है कि समान वस्तु की परिभाषा से संबंधित नियम 2(घ) में निनिर्दिष्ट है कि समान वस्तु से वह वस्तु अभिप्रेत है जो जांच के अधीन वस्तु से सभी प्रकार से 'समान' अथवा उसके जैसी वस्तु है अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में

अन्य कोई वस्तु जिसकी विशेषताएं जांच के अधीन वस्तु से बहुत अधिक मिलती-जुलती हैं। यह स्थापित करने के लिए कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुएं सम्बद्ध देशों से निर्यातित वस्तु के समान हैं, प्राधिकारी द्वारा तकनीकी विनिर्देशनों, विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य एवं उपयोगों तथा टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं पर विचार किया गया। इसके अतिरिक्त, यह निवेदन किया गया है कि भारत और संबद्ध देश में मूल कच्ची सामग्री में अंतर के फलस्वरूप बाजार लागत में अंतर आता है जिसके फलस्वरूप कीमतों में अंतर होता है और इसलिए उनके द्वारा बनाई गई वस्तु समान उत्पाद नहीं हो सकती। प्रयोक्ता उद्योग ने घरेलू उद्योग की सभी ग्रेडों की विनिर्माण की अयोग्यता के बारे में तर्क प्रस्तुत किए हैं। प्राधिकारी ने निर्यातकों सहित विभिन्न पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों और संबद्ध देश के सहयोगी निर्यातकों के बिक्री आकड़ों का कार्य स्थल पर सत्यापन करने के पश्चात् इन तर्कों की ध्यान पूर्वक जांच की है। जांच के आधार पर यह नोट किया जाता है कि उत्पाद की सुविधाओं, भौतिक और रसायनिक गुणों और मौटाइयों आर संबद्ध वस्तु की विभिन्न मौटाइयों के भीतर कोई अधिक अंतर नहीं है। इसके अतिरिक्त, किसी अन्य साक्ष्य के साथ-साथ यह सुझाव देने वाली कोई सूचना प्राधिकारी को प्रस्तुत नहीं की गई है कि घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद से प्राधिकारी द्वारा पहले से अलग किए गए ग्रेडों को छोड़कर विशेष ग्रेडों का घरेलू उद्योग विनिर्माण नहीं कर सकता और ये ग्रेड परस्पर प्रतिस्थापनीय नहीं हैं। यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग अधिकांशतः उत्पादन के मुख्य भाग के लिए 120 डेनियर की गणना के साथ 100, 120 और 150 डेनियर में संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करता है। जबकि 120 डेनियर में भी संबद्ध वस्तुओं का अधिकांश आयात (80% से अधिक) किया गया है। इसके अलावा, यह भी नोट किया जाता है कि प्रत्येक विनिर्माता एक बड़े हिस्से के भीतर कुछ तंग खाने वाले कपड़ों को शामिल करने के लिए अपने उत्पाद को परिष्कृत बनाते हैं। परंतु इसका अर्थ यह नहीं होता कि उत्पाद आपस में प्रतिस्थापनीय नहीं हैं। विस्तृत जांच के आधार पर प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तुओं की विशेषताएं सम्बद्ध देशों से आयातित वस्तुओं तथा निर्यातक देशों के बाजार में बेची गई वस्तुओं के समान हैं। उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी का यह अभिमत है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विस्कस फिलामेंट यार्न तथा सम्बद्ध देशों से आयातित तथा वहां बेची जा रही वस्तुएं नियमों के अर्थ के भीतर समान वस्तुएं हैं।

(घ) घरेलू उद्योग

9. याचिका भारतीय मानव-निर्मित फाइबर उद्योग एसोसिएशन (एएमएफआईआई) द्वारा दायर की गई है। एनआरसी लि. कोसोराम इंडस्ट्रीज लि. तथा इंडियन रेयॉन एंड इंडस्ट्रीज लि., समान वस्तु के उत्पादक हैं। एएमएफआईआई के सदस्यों ने वर्तमान जांच के लिए संगत सूचना उपलब्ध कराई है तथा प्रस्तावित जांचों में हिस्सा लेने के संबंध में सहमति प्रदान की है। भारतीय उत्पादन में इन कम्पनियों के उत्पादन का हिस्सा 50% से अधिक है। मै. सेंचुरी रेयॉन (सेंचुरी टेक्सटाइल एंड इंडस्ट्रीज लि. का एक प्रभाग) तथा मै. बड़ौदा रेयॉन (सेंचुरी टेक्सटाइल एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड का एक प्रभाग) तथा मै. बड़ौदा रेयॉन कॉर्पोरेशन लि. भारत में समान वस्तु के अन्य उत्पादक हैं तथा वर्तमान याचिका को समर्थन प्रदान किया है। प्राधिकारी ने निर्धारित किया है कि (क) भारतीय उत्पादन में तीन याचिकाकर्ता कम्पनियों के उत्पादन, का एक प्रमुख हिस्सा है; (ख) घरेलू उत्पादक, याचिका में उल्लिखित तथ्य का स्पष्ट रूप से समर्थन कर रहे हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद कुल उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक है; तथा (ग) याचिका घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से दायर की गई है। प्राधिकारी ने उपर्युक्त की जांच के पश्चात् यह निर्धारित किया है कि नियम 2(घ) के साथ पठित नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग है तथा उपर्युक्त नियमावली के नियम 5(3) (क) के संदर्भ में याचिका दायर करने हेतु

मानदण्डों को पूरा करते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसे कई छोटे उत्पादक हैं जो भारतीय उत्पादकों अथवा आयातों के माध्यम से प्राप्त वीएफवाई के संबंध में वृद्धिकारी कार्यकलाप कर रहे हैं। प्राधिकारी का मानना है कि इस बात की परवाह न करते हुए कि वृद्धिकारी कार्यकलाप करने वाले लघु उत्पादकों के उत्पादन को भारतीय उत्पादन में शामिल किया जा रहा है अथवा नहीं, याचिका नियमावली के अधीन अपेक्षित मानदण्डों को पूरा करती है।

ड. न्यूनतम सीमा

10. जहां तक जांच अवधि (पीओआई) के दौरान सम्बद्ध देशों से आयातों के न्यूनतम सीमा से ऊपर रहने के अभिनिश्चय का प्रश्न है, प्राधिकारी द्वारा सम्बद्ध देशों के संबंध में डीजीसीआईएस, सीमाशुल्क पत्तन द्वारा कारोबार के संबंध में उपलब्ध कराए गए आंकड़ों तथा उत्तरदाता निर्यातकों द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों का अध्ययन किया गया। आंकड़ों की जांच के उपरांत यह पाया गया कि भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के कुल आयात में यूक्रेन से आयात का हिस्सा 3% से कम है। यूक्रेन से सम्भावित आयात की मात्रा के बारे में कोई आरोप अथवा जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस प्रकार यूक्रेन से वास्तविक अथवा सम्भावित आयात, नियमों के अर्थ के भीतर नगण्य है। अतः वर्तमान जांच के दायरे से यूक्रेन को बाहर कर दिया है एवं तदनुसार नियमावली के नियम 14 के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा यूक्रेन के विरुद्ध जांच समाप्त की जाती है। अतएव इस जांच परिणाम के शेष भाग में सम्बद्ध देशों का दायरा चीन जन. गण. तक पुनः परिभाषित किया जाता है। अब से, जहाँ तक की संदर्भित हो, इस जांच के सम्बद्ध देशों में केवल चीन जन. गण. शामिल होगा।

च. पाटन

11. धारा 9(क)(I) के तहत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है -

'सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो; या

जहाँ निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो -

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत;

बशर्ते कि उद्गम के देश से इतर देश से वस्तु के आयात के मामले में और जहां निर्यात के देश के जरिए केवल यानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का निर्यात के देश में उत्पादन नहीं किया गया है अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम के देश में इसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ धारा 9 क (1)(ग) के अनुसार सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी थीं। किसी भी निर्यातक ने किसी भी रूप में शुरुआत संबंधी सूचना और प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया है और परिणामस्वरूप उन्हें इस जांच में असहयोगी माना गया है।

च (1) चीन जनवादी गणराज्य

(क) सहयोग

12. चार चीनी उत्पादकों/निर्यातकों ने जांच प्रक्रिया के दौरान स्वयं को ज्ञात बना लिया है और उन्होंने बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति और निर्यातक प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न परिशिष्टों से संबंधित प्रश्नावली के संबंध में सूचना देते हुए निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दिया है।

(ख) सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत

(मै0 जिनजियांग केमिकल फाइबर कं0 लि0 (जिन जियांग), मै0 यिबीन ग्रेस कं0 लि0 (ग्रेस), यिबीन हीस्ट फाइबर कं0 लि0 (हीस्ट) और मै0 एच एम ई आई थ्रेड कं0 लि0 (एच एम ई आई) चीन जन. गण.

13. प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातक मै0 जिनजियांग के निवेदनों की जांच बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली और निर्यातक की प्रश्नावली के विभिन्न परिशिष्टों के संदर्भ में इसके जवाबों के आधार पर की है। जवाबों की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 जिनजियांग बेलू केमिकल फाइबर ग्रुप कं0 लि0 ("ग्रुप कंपनी") जो कंपनी का एक प्रवर्तक है और संबद्ध कंपनी में **** % शेयरधारिता वाली राज्य के पूर्णतः स्वामित्व वाली कंपनी है। तथापि सत्यापन के दौरान यह निवेदन किया गया था कि राज्य मात्र एक शेयरधारक है और राज्य द्वारा कंपनियों के प्रतिदिन के कार्य अथवा वाणिज्यिक और कीमत संबंधी निर्णयों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाता है। बीजक और कच्ची सामग्रियों के क्रय संविदा के संबंध में कंपनियों के अधिकारियों द्वारा यह तर्क दिया गया था कि राज्य के स्वामित्व वाले अन्य उद्यमों अथवा अन्य कंपनियों से पैकेजिंग सामग्री के साथ कच्ची सामग्रियों मध्यवर्ती वस्तुओं और उपयोगी वस्तुओं की कोई अधिमानी सोर्सिंग नहीं है। सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान सत्यापन दल ने कच्ची सामग्रियों के क्रय हेतु कुछ बीजकों और संविदाओं को एकत्र किया, जो काटन की लुग्दी काटन लिन्टर, कार्बिक सोडा, सल्फर एसिड, जिंक सल्फेट, कार्बन बिसुल्फाइड और कोयले से संबंधित हैं। जिन कीमतों पर ग्रुप कंपनी अथवा राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी से कच्ची

सामग्रियों का क्रय किया जाता है उन कीमतों को उच्चतर अथवा उसी स्तर पर दर्शाया जाता है जिस पर उनका निजी कंपनियों से क्रय किया जाता है। तथापि यह नोट किया गया था कि आर एम बी की कुल शेयर पूंजी में से आर एम बी **** के बराबर ****, **** % शेयर असूचीबद्ध थे और उन पर राज्य का स्वामित्व था। यह भी देखा गया था कि यह प्रतिशत धारिता असूचीबद्ध रही थी और बिना किसी बाजार उतार चढ़ाव के। जहां तक कंपनी में निर्देशक मंडल का संबंध है, यह देखा गया था कि अधिकांश निदेशकों को मै० जिनजियांग बैलू केमिकल फाइबर ग्रुप कंपनी द्वारा नियुक्त किया जाता है और स्वतंत्र निदेशक अल्पसंख्या में हैं। कंपनी के अध्यक्ष जो कंपनी का एक निदेशक भी होता है, को मै० जिनजियांग बैलू केमिकल फाइबर ग्रुप कंपनी द्वारा नियुक्त किया जाता है जो राज्य के स्वामित्व वाली एक कंपनी है।

14. जहां तक निर्यात कीमत का संबंध है, यह स्मरण किया जाता है कि डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों और निर्यातक के आंकड़ों में भारत को किए गए निर्यात सौदों में भिन्न-भिन्न इकाई मूल्यों को दर्शाया गया है जब इन सौदों की आयातक-वार और तारीख एवं मात्रा-वार तुलना की गई थी। तथापि, यह पाया गया था कि भुगतानों के भाग को टी टी भुगतान के रूप में किया गया था और शेष भुगतान डी/पी आधार पर प्राप्त किया गया था। निर्यातकों ने बताया कि उनके द्वारा इस भुगतान पद्धति का चयन किए जाने का कारण यह तथ्य था कि इससे उनको डूबे हुए ऋणों के विरुद्ध संहारा मिलेगा और इस तथ्य के मद्देनजर कि आयातक कभी-कभी माल प्राप्त करने के पश्चात् भुगतानों में चूक करते हैं। जब टी/टी भुगतान किए गए थे प्रत्येक सौदे के लिए निर्यातक को भारतीय आयातक द्वारा सूचित किया गया था। जब टी/टी द्वारा किए गए भुगतान प्राप्त किए जाएंगे केवल तब संबद्ध कंपनी संबद्ध उत्पादों को जहाज से भेजने की व्यवस्था करेगी। जिनजियांग के मामले में यह पाया गया था कि निर्यातक ने आंशिक रूप से टी टी भुगतान और आंशिक रूप से डी पी भुगतान से भुगतान प्राप्त कर लिया है। तथापि, जब सत्यापन दल द्वारा उल्लिखित बीजकों के विरुद्ध और लदान दस्तावेजों में उल्लिखित आयातक के विरुद्ध विभिन्न टी टी भुगतानों को संबद्ध करने के बारे में पूछा गया तो यह निवेदन किया गया था कि उनके लिए नाम से विभिन्न आयातकों के संबंध में टी टी वसूलियों को अलग करना कठिन होगा। तथापि निर्यातक ने सत्यापन दल को दस्तावेज प्रस्तुत किए जिनमें यह बात स्पष्ट की गई थी कि निर्यातक ने सारा पैसा प्राप्त कर लिया है जिसका टी टी और डी पी भुगतान आधार पर आयातक के लिए बीजक था। सत्यापन दल की संतुष्टि के लिए यह भी दर्शाया गया था कि नौवहन बिलों के दस्तावेजों में बीजक की पूरी राशि के साथ-साथ टी टी भुगतान की संख्या का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। साक्ष्य के साथ सत्यापन दल को यह भी बताया गया

था कि निर्यातक ने बीजक में यथा उल्लिखित उनके द्वारा प्राप्त की गई पूरी राशि के आधार पर वैट वापसी प्राप्त की थी। रिकार्ड का सत्यापन करने के पश्चात् यह पाया गया था कि हालांकि उनकी बिक्री मात्रा डी जी सी आई एंड एस की रिपोर्ट के अनेक सौदों से मेल खाती थी, लेकिन उनके मूल्य डी जी सी आई एंड एस की रिपोर्ट में दर्शाये गए मूल्यों से पूरी तरह मेल नहीं खाती थी। डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों और उनके बीजक एवं नौवहन बिलों में प्रदर्शित निर्यातक के आंकड़ों तथा बीजक में दर्शायी गयी कीमत पर उनकी संबद्ध वस्तुओं का भारतीय आयातकों द्वारा भारत में आयात किए जाने के प्रमाण में विसंगति के बारे में पूछे जाने पर निर्यातक पूरी तरह इस बात को सिद्ध नहीं कर सका कि बीजक की समूची राशि के लिए उन्होंने उसी आयातक से भुगतान प्राप्त किए थे और उनके भारतीय आयातक ने निर्यातक द्वारा बीजक बनाई गई कीमत पर संबद्ध वस्तुओं का वास्तविक रूप से आयात किया है। उपर्युक्त तथ्य के मद्देनजर, निर्यातक द्वारा प्रस्तुत और प्राधिकारी द्वारा यथा सत्यापित सूचना के अनुसार निर्यात कीमत लेने का प्रस्ताव है। तथापि, उन सौदों में प्राधिकारी द्वारा स्वीकार की गई निर्यात कीमत में उस सीमा तक और उस कीमत के अनुसार संशोधन किया गया था जिस कीमत पर आयातकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं का भारत में आयात किया गया था जहां भारत को संबद्ध वस्तुओं के बीजक एवं बिक्रियों का पत्तन के आंकड़ों से सुसंगतता स्थापित नहीं की जा सकती थी। प्राधिकारी ने निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यातक द्वारा दावा किए गए सभी समायोजनों को स्वीकार कर लिया गया है।

15. इसी प्रकार मै0 यिबीन ग्रेस कं0 लि0 (ग्रेस) और मै0 यिबीन हीस्ट कं0 लि0 (हीस्ट) द्वारा दाखिल किए गए जवाबों के संबंध में यह निवेदन किया गया था कि दोनों कंपनियों राज्य के स्वामित्व वाले उपक्रम (एस ओ ई एस) हैं। तथापि, यह दावा किया गया था कि राज्य केवल एक शेयर धारक है और कंपनियों के दिन प्रतिदिन के कार्य अथवा वाणिज्यिक और कीमत संबंधी निर्णयों में राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं है। जांचाधीन कंपनियां मै0 यिबीन ग्रेस कंपनी और हीस्ट फाइबर कं0 लि0 हैं। प्रश्नावली के उत्तर में यह उल्लेख किया गया था कि मै0 यिबीन ग्रेस ग्रुप कंपनी की यिबीन ग्रेस कंपनी लि0 में **** % शेयरधारिता और हीस्ट फाइबर कं0 लि0 में **** % शेयरधारिता है। चूंकि यह बताया गया था कि यिबीन ग्रेस ग्रुप कंपनी राज्य के स्वामित्व वाली है, इसलिए यिबीन ग्रेस ग्रुप कंपनी के पूंजीगत ढांचे की संरचना को समझने के लिए प्रयास किए गए थे।

16. मै0 यिबीन ग्रेस ग्रुप कंपनी के पूंजीगत ढांचे का विश्लेषण किया गया था। कंपनी और उसके वकील द्वारा यह बताया गया था कि मै0 यिबीन ग्रेस ग्रुप लिमिटेड निगम इस कंपनी के लिए दूसरा नाम है। इस कंपनी की पूंजीकृत पूंजी आर एम बी ***** मिलियन है। यह देखा गया था कि यिबीन ग्रेस ग्रुप कंपनी का यिबीन ग्रेस कं0 लिं0 में ***** % का निवेश है। यिबीन ग्रेस कं0 लिं0 की पूंजीकृत पूंजी आर एम बी ***** मिलियन है। इस कंपनी का हीस्ट फाइबर कं0 लिं0 में ***** % हिस्सा है। यह देखा गया था कि इन दोनों कंपनियों के लिए अध्यक्ष श्री फेंगटाओ साझे अध्यक्ष है। कंपनी से यह स्पष्ट करने के लिए कहा गया था कि यिबीन ग्रेस ग्रुप कंपनी कैसे अस्तित्व में आयी थी। कंपनी द्वारा यह स्पष्टीकरण दिया गया था कि प्रारंभ में वर्ष 1988 में सिचुआन प्रोविन्स यिबीन केमिकल फाइबर प्लांट (राज्य के पूर्ण स्वामित्व वाला) की वी एफ वाई का उत्पादन करने के लिए स्थापना की गई थी। वर्ष 1999 में इस संयंत्र की परिसंपत्तियों का यिबीन मूल्यनिर्धारण कार्यालय द्वारा ***** की उनकी रिपोर्ट सं0 ***** के तहत मूल्यनिर्धारण किया गया था। कुछेक कच्ची सामग्रियों और उपयोगी वस्तुओं से संबंधित कुछ दस्तावेजों को यह दिखाने के लिए उपलब्ध कराया गया था कि ग्रेस और हीस्ट द्वारा कच्ची सामग्रियों की खरीद ग्रेस ग्रुप अथवा अन्य एस ओ ई एस से बाजार द्वारा संचालित कीमतों पर की गई है। ग्रेस के निर्यात आंकड़ों का कंपनी के कई रिकार्डों से मिलान किया गया था। एक नमूना सौदा लिया गया था और निम्नलिखित दस्तावेजों का मिलान किया गया था (*****, बीजक सं. *****)। यह स्मरण किया जाता है कि डी जी सी आई एंड एस और निर्यातक के आंकड़ों में यह सौदा भिन्न-भिन्न इकाई मूल्यों को प्रदर्शित कर रहा था जब इन सौदों की आयातक वार और तारीख एवं मात्रा-वार तुलना की गई थी। तथापि, यह पाया गया था कि भुगतानों के भाग को टी टी भुगतान के रूप में भुगतान किया गया था तथा शेष भुगतान डी/पी आधार पर प्राप्त किया गया था। निर्यातक ने बताया कि उनके इस भुगतान पद्धति चुनने का कारण यह तथ्य था कि इससे उन्हें डूबे हुए ऋणों के विरुद्ध सहारा मिलेगा और इस तथ्य के मद्देनजर कि आयातक कई बार माल प्राप्त करने के पश्चात् भुगतानों में चूक करते हैं। ग्रेस के मामले में यह पाया गया था कि इसी आयातक ने उसी समय के दौरान निर्यातक को टी टी आधार पर पैसा भेजा था जब संबद्ध वस्तुएं आयातक को भेजी गई थीं (टी टी भुगतान के साथ आयातक के साथ केवल एक सौदा)। तथापि सत्यापन के दौरान मै0 हीस्ट ने स्वीकार किया कि वे उसी आयातक से वसूल किए गए पूरे भुगतानों का साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं क्योंकि यह देखा गया था कि भुगतानों के भाग

का भुगतान टी टी आधार पर किया गया था जिसके लिए निर्यातक इस बात को सिद्ध नहीं कर सका कि उनकी संबद्ध वस्तुओं का वास्तव में उन्हीं आयातकों द्वारा उसी कीमत पर आयात किया गया था जिस कीमत पर इन संबद्ध वस्तुओं को बीजकीकृत किया गया था । उपर्युक्त तथ्य के मद्देनजर निर्यात कीमत को निर्यातक द्वारा प्रस्तुत और प्राधिकारी द्वारा यथा सत्यापित सूचना के अनुसार लेने का प्रस्ताव है । तथापि उन सौदों में जहां भारत को संबद्ध वस्तुओं के बीजक और बिक्रियों को पतन के आंकड़ों के अनुरूप नहीं बनाया जा सका, प्राधिकारी द्वारा स्वीकार की गई निर्यात कीमत को उस कीमत की सीमा तक और उसके अनुसार संशोधित किया गया था जिस पर आयातकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं का भारत में भारत में आयात किया गया था । प्राधिकारी द्वारा निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यातक द्वारा दावा किए गए सभी दावों को स्वीकार कर लिया गया है ।

17. यह नोट किया जाता है कि सहयोगी निर्यातकों (मै0 ग्रेस और मै0 हीस्ट) के पास राज्य की अत्यधिक शेरधारिता है । यह भी नोट किया जाता है कि उनके जवाबों में उन प्रासंगिक तथ्यों के साथ कोई वास्तविक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए गए हैं जिनसे वे पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 और उनकी कंपनी को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान करने के संबंध में उनको भेजी गई बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली में यथाउल्लिखित धारणाओं का खंडन करना चाहते हैं । इसके अलावा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 में किसी एम ई टी दावे में इस बात का पर्याप्त साक्ष्य होना चाहिए कि निर्यात उत्पादक बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियों के अंतर्गत प्रचालन करता है । विशेष रूप से निर्यातक उत्पादक को यह साक्ष्य प्रस्तुत करना चाहिए कि कीमत लागत, और निविष्टियां, प्रौद्योगिकी और श्रम की लागत, उत्पादन बिक्री और निवेश संबंधी इसके निर्णय इस संबंध में राज्य के विशेष हस्तक्षेप के बगैर आपूर्ति और मांग को प्रदर्शित करने वाले बाजार संकेतकों के जवाब में लिए जाते हैं । इसलिए उन मामलों में जहां निर्णय लेने की प्रक्रिया और निदेशकों अथवा प्रबंधकों आदि जैसे मुख्य पदों की नियुक्ति संबंधी सभी परिणामों के साथ कंपनियां मुख्य रूप से अथवा पूरी तरह राज्य के स्वामित्व वाली है, जांच का उद्देश्य इस बात का भी आकलन करना है कि पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने की स्थिति में राज्य किस हद तक हस्तक्षेप कर सकता है और ऐसे हस्तक्षेप को रोकने के लिए कंपनी द्वारा क्या उपाय किए गए थे । इन विशेष मामलों में यह विचार किया गया था कि वे कंपनियां जो मुख्य रूप से राज्य के स्वामित्व की थीं, यह प्रदर्शित करने में विफल रही थीं कि राज्य के हस्तक्षेप को रोकने के लिए समुचित उपाय किए गए हैं और कि राज्य ने उनके व्यावसायिक निर्णयों में हस्तक्षेप नहीं किया था । इन परिस्थितियों के अंतर्गत यह मानने का प्रस्ताव है कि मुख्य रूप से राज्य के स्वामित्व की कंपनियों के व्यावसायिक निर्णयों में राज्य का अत्यधिक हस्तक्षेप हुआ था ।

18. जहां तक मै0 एच एम आई ई द्वारा किए गए निवेदनों का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि सहयोगी निर्यातक केवल मूल्यवर्धन उत्पादन कार्यकलाप कर रहा है न कि संबद्ध वस्तुओं का पूर्ण उत्पादन। इसके अलावा उनके जवाब में यह उल्लेख किया गया है कि संबद्ध कंपनी संबद्ध वस्तुओं का विनिर्माण नहीं करती है यद्यपि इसने निर्यातक की प्रश्नावली से संबंधित विभिन्न परिशिष्ट प्रस्तुत किए हैं। उनके जवाब से यह भी नोट किया जाता है कि उन्होंने विस्कस रेयन की खरीद उत्पादकों नामतः मै0 ग्रेस और मै0 हीस्ट से की है जिन्होंने जांच में अलग से जवाब दिया है और जिनके पास राज्य की अत्यधिक शेरधारिता है। कंपनी ने सूचित किया कि उनका उत्पाद विस्कस रेयन कढ़ाई किया हुआ धागा है और इसको विचाराधीन उत्पाद के दायरे के भीतर नहीं लिया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी सूचित किया कि उनके उत्पाद का उत्पादन चरखी पर लपेटने, गुथने, लच्छी करने अथवा केन्द्र से लपेटने, तैयार उत्पाद की गुणवत्ता की जांच करने और ग्रेडिंग एवं पैकिंग की प्रक्रिया के द्वारा किया जाता है। यह भी सूचित किया गया था कि उनके फैक्ट्री दौरे से यह स्पष्ट हुआ था कि उनके रंगाई किए गए विस्कस रेयन कढ़ाईयुक्त धागे का उत्पादन कच्चे सफेद विस्कस रेयन कढ़ाईयुक्त धागे को इसकी कच्ची सामग्री के रूप में प्रयोग करके किया जाता है। इसके अलावा इसका उत्पादन रंगाई, सुखाई, अर्द्ध परिष्कृत गुणवत्ता जांच, चरखी पर लपेटने, कोन वाइंडिंग, ग्रेडिंग और पैकिंग की प्रक्रिया के द्वारा किया जाता है। उनकी फैक्ट्री परिसर के दौरे के बाद सत्यापन दल को यह बताया गया था कि रेयन कढ़ाई धागा विस्कस फिलामेंट यार्न का डाऊन स्ट्रीम गहन प्रक्रिया वाला उत्पाद है और उसका एच एस कोड भी सामान्य विस्कस फिलामेंट यार्न से भिन्न है। कढ़ाई धागे का एच एस कोड 4503.4100 है। सत्यापन के दौरान विस्कस यह भी निवेदन किया गया था कि विस्कस रेयन कढ़ाई धागे का प्रयोग मुख्यतः कढ़ाई में होता है और बुनाई प्रचालन में विस्कस फिलामेंट यार्न के स्थान पर इसका प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान यह भी तर्क दिया गया था कि उनके उत्पाद अर्थात् कढ़ाईयुक्त धागे की कीमतें रंगाई, सुखाई, चरखी पर लपेटना, कोन वाइंडिंग, गुथाई, ग्रेडिंग और पैकिंग की प्रक्रिया के जरिए किए गए अत्यधिक मूल्य वर्धन के कारण विस्कस फिलामेंट यार्न की कीमतों से सामान्यतः 50 प्रतिशत अधिक होती हैं। इस जवाब के मद्देनजर यह माना जाता है कि प्रतिवादी निर्यातक द्वारा भारत को किसी भी संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया गया है और इसलिए प्रतिवादी निर्यातक के लिए किसी पृथक पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया जा सका।

19. जहां तक मै0 यिबीन ग्रेस, मै0 यिबीन हीस्ट और मै0 जिनजियांग का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि प्रतिवादी निर्यातक वास्तविक रूप से राज्य के स्वामित्व में हैं। इसके अलावा निर्दिष्ट

प्राधिकारी ने अपेक्षित प्रपत्र और विधि से सूचना के लिए अनुरोध करते हुए चीनी उत्पादकों को इस धारणा का खंडन करने की सलाह दी थी कि इन कंपनियों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली कंपनियां माना गया है। ऐसी धारणा का खंडन करते समय कंपनियों द्वारा सूचना और साक्ष्य उपलब्ध कराया जाना अपेक्षित था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस संबंध में प्रश्नावली का जवाब देना अपर्याप्त है क्योंकि प्रश्नावली का प्रयोजन केवल कुछेक विशिष्ट सूचनाएं प्राप्त करना है। यह साबित करने का दायित्व भी इन निर्यातक कंपनियों पर है कि ये कंपनियां बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति को पूरा करती हैं। वास्तव में इन कंपनियों के लिए यह साबित करना अपेक्षित है कि वे राज्य के हस्तक्षेप से मुक्त हैं और नियमों के अंतर्गत निर्धारित मानदंडों को पूरा करती हैं। इन विशेष मामलों में यह माना गया था कि वे कंपनियां जो मुख्य रूप से राज्य के स्वामित्व में हैं, यह प्रदर्शित करने में विफल रही थीं कि राज्य के हस्तक्षेप को रोकने के लिए समुचित उपाय किए गए हैं और राज्य का उनके व्यावसायिक निर्णयों में हस्तक्षेप नहीं था। प्रकटन के पश्चात यह बताया गया है कि कंपनी में चेयरमैन को हर कंपनी (जो कि एक राज्य की मालीकाना कंपनी है) द्वारा नियुक्त नहीं किया गया है। इस संबंध में यह स्पष्ट किया जाता है कि निर्देशकों का चयन और उसके बाद निर्देशक बोर्ड के चेयरमैन का चयन भी शेयरधारकों द्वारा किया जाता है जहां राज्य के स्वामित्व की कंपनियां अधिक संख्या में होती हैं। इसलिए, यह दावा नहीं किया जा सकता कि राज्य के स्वामित्व वाली कंपनियों का निर्देशक बोर्ड में निर्देशकों और तत्पश्चात चेयरमैन की नियुक्ति पर कोई प्रभाव नहीं हुआ था। इन परिस्थितियों के अंतर्गत यह मानने का प्रस्ताव है कि मुख्य रूप से राज्य के स्वामित्व वाली कंपनियों के व्यावसायिक निर्णयों में राज्य का अत्यधिक हस्तक्षेप था। उपर्युक्त तथ्य के मद्देनजर प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का परिकलन पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के आधार पर किया है।

20. प्रकटन विवरण के पश्चात अनेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि प्राधिकारी को भारत को प्रतिनिधि देश के रूप में समझने में न्यायसंगत नहीं है। यह भी कहा गया है कि प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण की पद्धति भी प्रकट नहीं की है। यह भी तर्क दिया गया है कि भारत और चीन में उत्पादन की प्रक्रिया अलग-अलग है। भारत में उत्पादन लागत को स्वीकार नहीं किया जा सकता। सभी हितबद्ध पक्षकारों की निवेदनों की जांच करने के पश्चात यह नोट किया जाता है जैसा कि प्रकटन विवरण और इस जांच परिणाम में कहा गया है कि जब विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों ने भारत को उचित प्रतिनिधि देश के रूप में पसंद किए जाने का विरोध किया था तब किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए किसी उचित तीसरे संगत देश के बारे में सूचना उपलब्ध नहीं कराई थी। हालांकि, सी सी सी टी ने एक प्रतिनिधि देश के रूप में ब्राजील पर विचार करने का

सुझाव दिया था परन्तु यह नोट किया जाता है कि ब्राजील के संबंध में कोई संगत सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई थी जिससे ब्राजील को एक उचित तीसरे देश के रूप में समझा जाता है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी यह समझते हैं कि प्राधिकारी के पास केवल उचित विकल्प भारत में उत्पादन की लागत के अनुमानों के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य निर्धारित करें। कच्ची सामग्रियों में अंतर के बारे में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यह मानना उचित नहीं होगा कि कच्ची सामग्रियों के कारण लागतें भारत की लागतों और चीन की लागतों पर ऐसे अंतर पर मात्र विचार करके प्रारंभिक कच्ची सामग्री में अंतर के कारण फर्क हो सकता है। इसे केवल भारत में लागतों और तीसरे देशों में लागतों के आधार पर ऐसे अंतरों पर विचार करके निर्धारित किया जा सकता है। तथापि, ऐसा कोई दावा नहीं किया गया है। इसलिए, प्राधिकारी इस संबंध में सामान्य मूल्य से कोई संभव समायोजन नहीं कर सकते।

21. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदकों ने एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा परिकलित मूल्य का साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है। इस तथ्य के बावजूद कि प्राधिकारी ने ई यू के ज्ञात निर्यातकों को संगत सूचना प्रस्तुत करने के लिए लिखा था, आवेदकों द्वारा एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश से अन्य देशों को कीमत भी उपलब्ध नहीं करायी गई थी। यह नोट किया जा सकता है कि बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश से भारत को कीमतों को इन कारणों से नहीं अपनाया जा सका कि (क) विचाराधीन उत्पाद की दिनीर, रंग और चमक पर निर्भर करते हुए अनेक भिन्न-भिन्न किस्में थीं जो संबद्ध लागतों और कीमतों में अलग-अलग होती हैं; (ख) कारखाना द्वार पर कीमतों का निर्धारण करने लिए कीमत समायोजन उपलब्ध नहीं है। चीन के उत्पादकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में मानने के घरेलू उद्योग के दावे का खंडन करते हुए चीन के उत्पादकों अथवा आयातकों अथवा अन्य किसी हितबद्ध पक्षकार ने न तो कोई दावा किया और न ही किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा परिकलित मूल्य के संबंध में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। इन परिस्थितियों के अंतर्गत प्राधिकारी ने निर्धारित किया है कि अंतिम जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ उपलब्ध एकमात्र विकल्प एक तर्कसंगत लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तविक रूप से अदा की गई अथवा देय कीमत जिसे विधिवत रूप से समायोजित किया गया है, पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य का निर्धारण करना है। भारत में वास्तविक रूप से अदा की गई कीमत पर इस कारण से विचार नहीं किया गया है कि यह मंद रही है। अतः प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का परिकलन भारत में उत्पादन लागत जिसे कच्ची सामग्रियों की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों और इष्टतम परिवर्तन लागतों को प्रदर्शित करने के लिए विधिवत रूप से समायोजित किया गया है, बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्ययों और उचित लाभ को ध्यान में रख कर किया है।

(ग) तुलना

22. सामान्य मूल्य (परिकलित सामान्य मूल्य) और कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत के बीच न्यायसंगत तुलना करने के प्रयोजनार्थ उन अंतरों के लिए समायोजनों के रूप में उचित छूट दी गई थी जो उनके अनंतिम निर्धारण के पश्चात उनका सत्यापन किए जाने के अध्यक्षीन कीमतों और कीमत सुसंगतता को प्रभावित करते हैं।

(घ) पाटन मार्जिन

23. प्राधिकारी ने कारखाना द्वार स्तर पर विभिन्न किस्मों के सामान्य मूल्यों और निर्यात कीमत के बीच तुलना करके विभिन्न ग्रेडों/किस्मों में से प्रत्येक के लिए उनके विनिर्देशनों जैसे संबद्ध वस्तुओं की चमक, दिनीर और द्युति पर निर्भर करते हुए पाटन मार्जिन का परिकलन किया है। यह तुलना जांच अवधि के दौरान उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा विनिर्मित और भारत को निर्यातित संबद्ध वस्तुओं की प्रत्येक किस्म की भारित औसत बिक्री कीमत पर आधारित थी जिनके लिए संबद्ध वस्तुओं की तुलनीय किस्म को पाया जा सका था। अतः भारित औसत समग्र पाटन मार्जिन का निर्धारण अलग-अलग किस्म पर पाये गए नकारात्मक पाटन को शून्य किए बगैर प्रत्येक किस्म पर पाये गए पाटन की गणना करके किया गया था। तुलना में जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा संबद्ध वस्तुओं के पाटन की विद्यमानता प्रदर्शित हुई। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है।

| देश | उत्पादक/निर्यातक का नाम | डी एम (अम.डा./किग्रा.) | डी एम % |
|------------|------------------------------------|------------------------|---------|
| चीन जन.गण. | मै0 यिबीन ग्रेस कं0 लि0 | **** | 25.65 |
| | मै0 यिबीन हीस्ट कं0लि. | **** | 32.82 |
| | मै0 जिनजियांग केमिकल फाइबर कं0 लि0 | **** | 24.30 |
| | अन्य | **** | 74 |

24. प्रकटन विवरण के पश्चात विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह निवेदन किया गया है कि इस जांच में अनंतिम जांच परिणाम जारी नहीं किए गए हैं जो सामान्य प्रक्रिया से पूरी तरह से भिन्न हैं। इस तर्क के संबंध में यह बताया जाता है कि याचिकाकर्त्ताओं, विदेशी उत्पादकों, डी जी सी आई एंड एस तथा सीमा शुल्क विभाग के पत्तन प्राधिकारियों द्वारा उपलब्ध कराई गई सौदे-वार आयात सूचना से उस मात्रा और कीमत में पर्याप्त अंतर मालूम हुआ जिन पर आयातों की सूचना दी गयी है। मात्रा और कीमतों के बारे में पर्याप्त अंतर जिसका निर्धारण कर प्रत्यक्ष प्रभाव होता है, की दृष्टि से यह उचित समझा गया था कि प्रारंभिक जांच परिणाम जारी न किए जाएं। इसके अतिरिक्त, यह तर्क दिया गया है कि प्राधिकारी को सी सी सी टी के आंकड़े स्वीकार और डी जी सी आई एस की सूचना अस्कार करनी चाहिए थी। इस संबंध में यह बताया जाता है कि डी जी सी आई एंड एस द्वारा प्रस्तुत सूचना इस कारणवश उपयोगी नहीं समझी गई थी। संबद्ध वस्तु के आयातों की उन मात्रा की सूचना में प्रदर्शित नहीं की गई थी तथापि, सूचना को उस कीमत तक निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ नहीं छोड़ा जा सकता था जिस पर वस्तु की सूचना दी गई थी। यह भी नोट किया जाता है कि सीमाशुल्क पत्तन प्राधिकारियों और डी जी सी आई एंड एस द्वारा सूचित कीमतें उस कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ पूर्णरूपेण संगत और उचित है जिस पर वस्तु का आयात किया गया है इसके अलावा, चूंकि डी जी सी आई एस की सूचना में विदेशी उत्पादकों से संबंधित सूचना नहीं है इसलिए, उसका पूर्ण रूपेण उपयोग नहीं किया जा सका। तथापि, जिस सीमा तक सूचना का उपयोग किया जा सका उसे वर्तमान जांच में प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह तर्क दिया गया है कि संबद्ध वस्तु के उत्पादन की लागत इस बात पर निर्भर करते हुए अलग है कि क्या वस्तु का उत्पादन कौट स्पन्न अथवा कन्टीन्यूस स्पन्न प्रौद्योगिकी के जरिए किया गया है और प्राधिकारी को पाटन मार्जिन निर्धारित करते समय इसे ध्यान में रखना चाहिए था। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उत्पादन प्रक्रिया में इस अंतर के कारण लागतों में अंतर को प्राधिकारी द्वारा विधिवत माना गया है और सी एस वाई तथा पी एस वाई के लिए अलग सामान्य मूल्य निर्धारित किए गए हैं। इसके अलावा, सी एस वाई और पी एस वाई के लिए अलग से निर्यात कीमत मानी गयी है। तत्पश्चात, संबद्ध वस्तु के लिए एक धारित औसत पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है।

छ. क्षति

घरेलू खपत/मांग

25. याचिकाकर्त्ता ने याचिका में चीन से आयातों की मात्रा का निम्नानुसार दावा किया है:

| वर्ष | मात्रा मी०टन में | मूल्य(लाख रुपये) | दर प्रति किग्रा. |
|-----------|------------------|------------------|------------------|
| 2001-02 | 1933 | 2018 | 104.42 |
| 2002-03 | 6580 | 7899 | 120.05 |
| 2003-04 | 4842 | 5660 | 116.89 |
| जांच अवधि | 3626 | 4483 | 123.64 |

चार चीनी उत्पादकों से प्राप्त जवाब में आयातों की मात्रा को निम्नानुसार प्रदर्शित किया गया

है:

| वर्ष | निर्यातक | मात्रा मी.टन में | मूल्य अम मिलियन डालर में | आई एन आर में दर प्रति किग्रा. |
|------|------------|------------------|--------------------------|-------------------------------|
| 2002 | ग्रेस | **** | **** | **** |
| | एच एम ई आई | शून्य | | |
| | हीस्ट | **** | | |
| | जिनजियांग | **** | | |
| 2003 | ग्रेस | **** | **** | **** |
| | एच एम ई आई | शून्य | | |
| | हीस्ट | **** | **** | **** |
| | जिनजियांग | **** | | |
| 2004 | ग्रेस | **** | **** | **** |
| | एच एम ई आई | **** | **** | **** |
| | हीस्ट | **** | **** | **** |
| | जिनजियांग | **** | **** | **** |
| | कुल | **** | **** | **** |

प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस और जे एन पी टी, मुम्बई सीमाशुल्क और चेन्नई सीमाशुल्क सहित विभिन्न सीमाशुल्क हाऊसों से सूचना एकत्र की। उपलब्ध करायी गई सूचना से जांच अवधि के लिए आयातों की मात्रा निम्नानुसार प्रदर्शित होती है:-

मात्रा: मी.टन में

| स्रोत | मात्रा मी.टन में | मूल्य लाख रुपये में | आई एन आर में दर प्रति किग्रा. |
|---------------------|------------------|---------------------|-------------------------------------|
| डी जी सी आई एंड एस | 4626 | 5656.06 | 122.27 |
| जे एन पी टी, मुम्बई | | | |
| ➤ जिनजियांग | | | |
| ➤ यिबीन हीस्ट | | | |
| ➤ यिबीन ग्रेस | | | |
| जे एन पी टी पर कुल | 2810 | 3961.64 | 140.97 |
| चेन्नई पत्तन | | | |
| ➤ जिनजियांग | | | |
| ➤ यिबीन हीस्ट | | | |
| ➤ यिबीन ग्रेस | | | |
| चेन्नई पत्तन पर कुल | 538 | 636.16 | 118.19 |

मौके पर जांच की प्रक्रिया के दौरान सी सी सी टी के साथ विचार-विमर्श किए गए थे। सी सी सी टी ने जांच अवधि में भारत को किए गए निर्यातों की मात्रा की निम्नानुसार पुष्टि की:

| वर्ष | मात्रा मी.टन में | मूल्य मिलियन अम.डा. में | आई एन आर में दर प्रति किग्रा. |
|------|------------------|----------------------------|-------------------------------------|
| 2002 | 6730 | 20.61 | 149.26 |
| 2003 | 7040 | 22.65 | 150.96 |
| 2004 | 5580 | 16.90 | 138.20 |

26. यह देखा जाएगा कि विभिन्न स्रोतों से आयातों की भिन्न-भिन्न मात्रा प्रदर्शित हुई थी। प्राधिकारी को प्रतिवादी निर्यातक, आई बी आई एस, डी जी सी एंड एस, जे एन पी टी मुम्बई पत्तन और चेन्नई पत्तन सहित विभिन्न सीमाशुल्क पत्तनों से आयातों के सौदेवार ब्यौरे प्राप्त हुए थे। उपलब्ध कराई गई सूचना में अन्य बातों के साथ-साथ निर्यातक का नाम (आई बी आई एस और डी जी सी आई एंड एस सूचना के अलावा) आयातक

का नाम, वस्तुओं की मात्रा, मूल्य, आयात की तारीख आदि शामिल थे। अतः प्राधिकारी के लिए लदान से संबंधित विभिन्न सूचनाओं में लदान आधार पर सह संबंध स्थापित करना व्यवहार्य था। जांच से अनेक ऐसे दृष्टांतों का पता चला जहां यद्यपि मात्राएं समान थीं लेकिन संबद्ध मूल्यों में अत्यधिक अन्तर था। इसके साथ जांच से पता चला है कि प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा बताए गए अनेक आयात सौदों को द्वितीयक स्रोतों, जे एन पी टी मुम्बई, चेन्नई पत्तन और डी जी सी आई एंड एस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों/सूचना में नहीं बताया गया है। यह भी पाया गया है कि अनेक प्रविष्टियों के संबंध में सीमाशुल्क विभाग द्वारा बताए गए आयातों का मूल्य निर्यातक द्वारा बताए गए निर्यातों के मूल्य से तब भी बहुत अधिक भिन्न है जब सीमाशुल्क विभाग बताया गया मूल्य उसी निर्यातक द्वारा उठाए गए बीजक के मूल्य के आधार पर था जैसा कि पाटन मार्जिन संबंधी पैर में उल्लेख किया गया है। निर्यातकों द्वारा यह प्रमाणित नहीं किया गया है कि उनके द्वारा आयातक को बीजक की गई वस्तुओं की किसी अन्य पक्षकार द्वारा निकासी की जा सकती थी। वास्तव में, इस आशय का एक परिमाणित दावा भी नहीं है। इन परिस्थितियों के अंतर्गत यह विचार किया गया है कि प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा बताए गए अलग-अलग आयात सौदों और चेन्नई पत्तन और जे एन पी टी सीमाशुल्क द्वारा प्राप्त किए गए आंकड़ों जिन्हें जांच अवधि के लिए निर्यातक के जवाब में नहीं प्रदर्शित किया गया है, पर विचार करके आयात की मात्रा का निर्धारण करना उपयुक्त होगा। पूर्ववर्ती वर्षों के लिए आयात आंकड़े डी जी सी आई एंड एस की सौदे-वार सूचना के अनुसार लिए गए हैं।

पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी ने आयात की मात्रा पर निम्नानुसार विचार किया है:

| वर्ष | मात्रा मी.टन में |
|-----------|------------------|
| 2001-02 | 1978 |
| 2002-03 | 6034 |
| 2003-04 | 6069 |
| जांच अवधि | 5580* |

* आंकड़े सी सी सी टी के आंकड़ों के साथ अत्यधिक मेल खाते हैं।

27. विद्याराधीन उत्पाद की घरेलू खपत/मांग की गणना के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा को भारत में कुल आयातों में जोड़ दिया है जैसा कि पूर्ववर्ती पैराग्राफों में निर्धारण किया गया है।

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर, 04 |
|--------------------------|--------|---------|---------|---------|----------------------|
| चीन से आयात | मी. टन | 1978 | 6034 | 6069 | 5580 |
| अन्य देशों से आयात | मी. टन | 993 | 2284 | 672 | 673 |
| याचिकाकर्ता | मी. टन | 18146 | 18658 | 19430 | 21689 |
| अन्य सहायक भारतीय उद्योग | मी. टन | 11507 | 10382 | 9134 | 11519 |
| कुल मांग | मी. टन | 32624 | 37358 | 35305 | 39460 |

मांग विश्लेषण के आधार पर, यह माना गया है कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। वास्तव में क्षति अवधि के दौरान मांग में 21% की वृद्धि हुई है यद्यपि अधिकांश वृद्धि जांच अवधि के दौरान हुई है।

संबद्ध देश और अन्य देशों के मूल के आयात

आयातों की मात्रा

28. चीन जन.गण. और अन्य देशों से भी विचाराधीन उत्पाद के पाटित आयातों की मात्रा नीचे तालिका में दी गई है :-

| | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जन. से दिस., 04 |
|-----------------------|--------|---------|---------|---------|-----------------|
| आयात-चीन | मी. टन | 1978 | 6034 | 6069 | 5580 |
| सूचीबद्ध | | 100.00 | 305.00 | 306.77 | 282.08 |
| वर्ष दर वर्ष परिवर्तन | % | | 205.00 | 0.58 | -8.05 |
| आयात-अन्य देश | मी. टन | 993 | 2284 | 672 | 673 |
| सूचीबद्ध | | 100.00 | 229.99 | 67.63 | 67.76 |
| वर्ष दर वर्ष परिवर्तन | % | 0.00 | 129.99 | -70.59 | 0.19 |
| कुल आयात | मी. टन | 2971 | 8318 | 6740 | 6253 |
| सूचीबद्ध | | 100 | 280 | 227 | 210 |
| मांग | मी. टन | 32624 | 37358 | 35305 | 39460 |
| सूचीबद्ध | | 100 | 115 | 108 | 121 |
| वर्ष दर वर्ष परिवर्तन | % | 0.00 | -9.78 | -12.02 | 26.10 |

आयात आंकड़ों के आधार पर, यह नोट किया गया है कि संबद्ध देश से संबद्ध उत्पादों के आयात में समग्र रूप से वृद्धि हुई है।

कुल आयातों में संबद्ध देश का हिस्सा

29. वर्ष 2001-2002 और जांच अवधि के बीच यह नोट किया गया है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई थी और वह पर्याप्त थी।

| आयातों में बाजार हिस्सा | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर, 04 |
|-------------------------|------|---------|---------|---------|----------------------|
| चीन | % | 66.57 | 72.54 | 90.03 | 89.24 |
| अन्य देश | % | 33.43 | 27.46 | 9.97 | 10.76 |

यह नोट किया गया है, वर्षों के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात में पर्याप्त वृद्धि हुई, जिसके परिणामस्वरूप भारत को संबद्ध वस्तुओं के कुल आयातों की तुलना में संबद्ध आयातों के हिस्से में अत्यधिक वृद्धि हुई है। उसी अवधि में भारत के आयातों में अन्य देशों के हिस्से में काफी गिरावट आई है।

| आयातों में बाजार हिस्सा | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जन. से दिस., 04 |
|---|--------|---------|---------|---------|-----------------|
| चीन | % | 66.57 | 72.54 | 90.03 | 89.24 |
| अन्य देश | % | 33.43 | 27.46 | 9.97 | 10.76 |
| वर्ष दर वर्ष परिवर्तन | % | | 16 | -8 | 21 |
| वर्ष दर वर्ष परिवर्तन | % | | 21 | -11 | 17 |
| उत्पादन | मी. टन | 17793 | 21038 | 21907 | 21465 |
| घरेलू उत्पादन के अनुपात में चीन का हिस्सा | % | 11.12 | 28.68 | 27.70 | 26.00 |
| मांग | मी. टन | 32624 | 37358 | 35305 | 39460 |
| खपत के अनुपात में चीन का हिस्सा | % | 6.06 | 16.15 | 17.19 | 14.14 |

उपर्युक्त के आधार पर यह माना गया है कि संबद्ध देश से आयातों में काफी वृद्धि हुई है, और घरेलू उद्योग के समान उत्पादों के उत्पादन की तुलना में इसमें अत्यधिक वृद्धि हुई है।

कुल मांग में पाटित आयातों का बाजार हिस्सा

30. प्राधिकारी ने भारत में खपत के संबंध में, संबद्ध देश से पाटित आयातों के हिस्से की जांच की है। प्राधिकारी ने पाया है कि संबद्ध देश का हिस्सा जो वर्ष 2001-2002 में 6.06% था, जांच अवधि के दौरान बढ़कर मांग का 14.14% हो गया था। दूसरी ओर, उसी अवधि के दौरान संबद्ध देश के अलावा अन्य देशों से आयातों के बाजार हिस्से में 3.04% से 1.71% की गिरावट हुई थी।

| मांग से इकाई बाजार हिस्सा | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जन. से दिस., 04 |
|--|------|---------|---------|---------|-----------------|
| घरेलू उद्योग | % | 55.62 | 49.94 | 55.04 | 54.96 |
| अन्य सहायक कम्पनियां | % | 35.27 | 27.79 | 25.87 | 29.19 |
| भारतीय उद्योग | % | 90.89 | 77.73 | 80.91 | 84.15 |
| चीन | % | 6.06 | 16.15 | 17.19 | 14.14 |
| अन्य देश | % | 3.04 | 6.11 | 1.90 | 1.71 |
| बाजार हिस्से में परिवर्तन - आधार वर्ष की तुलना में | | | | | |
| घरेलू उद्योग | % | | -5.68 | -0.59 | -0.66 |
| अन्य सहायक कम्पनियां | % | | -7.48 | -9.40 | -6.08 |
| चीन | % | | 10.09 | 11.13 | 8.08 |
| अन्य देश | % | | 3.07 | -1.14 | -1.34 |

उपर्युक्त से यह देशा जा सकता है कि संबद्ध आयातों के हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई थी। यह भी देखा जा सकता है कि वर्षों के दौरान और जांच अवधि में घरेलू उद्योग ने किसी भी प्रकार से कोई महत्वपूर्ण बाजार हिस्सा नहीं गंवाया है। तथापि, उसी अवधि में कुल मांग में भारतीय उद्योग के हिस्से में 7 प्रतिशत की गिरावट आई है। संबद्ध देशों से इतर देशों के आयात हिस्से में गिरावट आई है और उन्हें नगण्य माना गया है।

कीमत कटौती

31. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और संबद्ध देश से आयातित सामग्री की पहुँच कीमत की तुलना की गई थी। घरेलू उद्योग की कीमतों का निर्धारण कारखानाद्वार स्तर पर किया गया था। चीन

जन.गण. से आयातों की पहुँच कीमत का निर्धारण करने के लिए, प्राधिकारी ने सीआईएफ मूल्य के साथ लागू आधारभूत सीमाशुल्क एवं अन्य प्रभारों को जोड़ा है। संबद्ध देश से संपूर्ण आयातों की पहुँच कीमत और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की तुलना से यह पता चला कि जाँच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की पहुँच कीमत से घरेलू बिक्री कीमतों में कटौती हुई थी। यद्यपि कीमत कटौती का मार्जिन अधिक नहीं है, तथापि, कीमत कटौती के मार्जिन से घरेलू उद्योग की सही स्थिति का पता नहीं चलता है क्योंकि घरेलू उद्योग की कीमतें पहले ही कम थीं। उत्तर देने वाले निर्यातकों के लिए भी कीमत कटौती का अलग-अलग निर्धारण कर लिया गया है, इसमें एक निर्यातक के अलावा जिसकी निर्यात की मात्रा अत्यधिक अल्प है (5% से कम), कीमत कटौती सकारात्मक है। यह नोट करना प्रासंगिक होगा कि चीन जन.गण. से निर्यात आंकड़ों की जाँच से पता चलता है कि मात्रा एवं कीमत के संबंध में उनकी निर्यात कीमतों में काफी अंतर है और इस जाँच में सभी आयातकों द्वारा पूर्ण असहयोग के कारण, समस्या और भी गंभीर हो गई है, जिन्होंने प्राधिकारी के साथ सहयोग न करने और आंकड़े प्रस्तुत न करने का फैसला किया है। इसके अतिरिक्त, निर्यातक की मात्रा एवं कीमतें, पत्तों और डीजीसीआईएस के आंकड़ों के साथ मेल नहीं खाती है और कई मामलों में ऐसा प्रतीत होता है कि निर्यातक द्वारा सूचित मात्राएं एवं कीमतें कम करके बताई गई हैं। सभी उत्तर देने वाले निर्यातकों से प्राप्त आंकड़ों की एक प्रति (आयातकों के नाम, तिथि और बीजक संख्याओं के बिना), और पत्तों एवं डीजीसीआई एण्ड एस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों को सभी हितबद्ध पक्षकारों के प्रयोजनार्थ सार्वजनिक फाइल में रखा गया है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर अलग-अलग परिदृश्यों के लिए कीमत कटौती मार्जिन का नीचे उल्लेख किया गया है। आगे यह भी कहा गया है कि प्राधिकारी ने विभिन्न ग्रेडों, डेनियरों और अन्य मानदण्डों के संदर्भ में 'निर्यातकों' एवं घरेलू उद्योग के सत्यापित आंकड़ों का पूर्ण रूप से विश्लेषण करने के पश्चात कीमत कटौती के मार्जिन का निर्धारण किया है।

डीजीसीआईएस, सीमाशुल्क पत्तन आंकड़ों, जेएनपीटी और चैन्नई सीमाशुल्क और निर्यातकों के उत्तर से प्राप्त मात्रा आधारित आंकड़ों हेतु जाँच अवधि के दौरान, समग्र रूप से विभिन्न ग्रेडों और उत्पाद के लिए चीन हेतु समग्र रूप से कीमत कटौती

डीजीसीआई एंड एस से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर चीन से कीमत कटौती

| विवरण | इकाई | जनवरी से दिसम्बर 04 |
|-------------------|--------------|---------------------|
| आयात-मात्रा | | |
| चीन | मी.टन | 4625 |
| अन्य देश | मी.टन | 673 |
| आयात-मूल्य | | |
| चीन | लाख रुपए | 5658 |
| अन्य देश | लाख रुपए | 911.88 |
| निर्यात कीमत | | |
| चीन | रुपए/किग्रा. | 122 |
| अन्य देश | रुपए/किग्रा. | 135.48 |
| पहुँच कीमत | | |
| चीन | रुपए/किग्रा. | 148 |
| अन्य देश | रुपए/किग्रा. | 164.21 |
| निवल बिक्री वसूली | रुपए/किग्रा. | **** |

पाटन मार्जिन (डीएम)% और क्षति मार्जिन (आईएम)% को दर्शाने वाली सारणी

| निर्यातक | डीएम% | आईएम% |
|-------------|-------|--------|
| जिंगजियांग | 24.30 | 12-18% |
| यिबिन ग्रेस | 25.65 | 5-10% |
| यिबिन हिस्ट | 32.82 | 8-15% |
| अन्य | 74% | 25-40% |

32. प्राधिकारी को उत्तरदाता निर्यातकों, आईबीआईएस, डीजीसीआई एंड एस, जेएनपीटी, मुम्बई पत्तन और चेन्नई पत्तन से आयातों के सौदेवार विवरण प्राप्त हुए हैं। प्रदान की गई सूचना में अन्य बातों के साथ-साथ, निर्यातक का नाम (आईबीआईएस और डीजीसीआई एंड एस की सूचना के अतिरिक्त), आयातक का नाम, मात्रा, वस्तुओं का मूल्य, आयात की तिथि इत्यादि शामिल हैं। अतः नौ-परिवहन आधार पर नौ-परिवहन संबंधी विभिन्न सूचनाओं को सह-संबद्ध करना व्यवहार्य था। जांचों से पता चला है कि कई मामलों में यद्यपि मात्राएं, एकसमान थीं परंतु सम्बद्ध मूल्यों में काफी अंतर था। उसी अवधि में जांच से यह पता चला कि उत्तर देने वाले निर्यातकों द्वारा सूचित आयात सौदों में से अधिकांश को गौण स्रोतों, जेएनपीटी मुम्बई, चेन्नई पत्तन सहित विभिन्न पत्तनों और डीजीसीआई एंड एस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों/सूचनाओं में सूचित नहीं किया गया है। जैसा निर्यात कीमत संबंधी पैरा में बताया गया है, यह भी पाया गया कि बड़ी संख्या में प्रविष्टियों के संबंध में सीमाशुल्क प्राधिकारी द्वारा सूचित आयातों का मूल्य निर्यातक द्वारा सूचित निर्यातों के मूल्य से काफी अलग है, जबकि सीमाशुल्क प्राधिकारी द्वारा सूचित मूल्य उसी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत बीजक के मूल्य पर आधारित है।

कीमत ह्रास

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जन. से दिस., 04 |
|-------------|--------------|---------|---------|---------|-----------------|
| निवल बिक्री | रु./कि.ग्रा. | **** | **** | **** | **** |
| सूचीबद्ध | | 100 | 124 | 113 | 102 |

33. उपर्युक्त आंकड़ों से यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2002-2003 में वृद्धि के पश्चात लगातार गिरावट प्रदर्शित हो रही है। पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक गिरावट आई है।

घरेलू उद्योग की स्थिति

34. मै0 केसोराम रेयॉन, मै0 इंडियन रेयॉन और मै0 एनआरसी की ओर से एएमएफआईआई द्वारा तीन कम्पनियों ने याचिका दायर की थी। यह नोट किया गया है कि मै0 सेंचुरी रेयॉन, मुम्बई ने प्रारंभिक जांच के समय याचिका का समर्थन किया था। जांच के प्रारंभ होने पर प्राधिकारी ने मै0 सेंचुरी रेयॉन से क्षति और क्षति मार्जिन से संगत सूचना मांगी थी। कम्पनी ने कुछ सूचना उपलब्ध कराई है, जो क्षति की विस्तृत जांच हेतु शामिल किए जाने के लिए पूर्ण नहीं है। उपर्युक्त के मद्देनजर, इस जांच में घरेलू उद्योग को हुई क्षति के निर्धारण प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने मै0 केसोराम रेयॉन, मै. एनआरसी और मै0 इंडियन रेयॉन को घरेलू उद्योग माना है।

नियमावली के अनुबंध II (iv) के अनुसार:-

- (iv) पाटित आयातों के प्रभाव का आकलन उस स्थिति में समान वस्तु के घरेलू उत्पादन के संबंध में किया जाएगा जब उपलब्ध आंकड़ों से उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादकों की बिक्री और लाभ जैसे मानदण्डों के आधार पर उक्त उत्पादन का अलग से अभिज्ञान करना हो। यदि उक्त उत्पादन का अलग से ऐसा अभिज्ञान संभव न हो तो पाटित आयातों के प्रभाव का आकलन उत्पादों के सबसे छोटे समूह या उत्पादों की रेंज, जिनमें समान उत्पाद भी शामिल है, के उत्पादन की जांच द्वारा किया जाएगा जिसके लिए आवश्यक सूचना प्रदान की जा सकती है।

35. प्राधिकारी नोट करते हैं कि समान वस्तु के संबंध में क्षति संबंधी सूचना का व्यवहार्य सीमा तक और अलग-अलग उपलब्धता के आधार पर सत्यापन कर लिया गया है। तथापि, ऐसी परिस्थितियों में जहां समान वस्तु के संबंध में अलग-अलग सूचना (उदाहरणतः क्षमता और क्षमता उपयोग) उपलब्ध नहीं है, क्योंकि उन्हें अलग-अलग अभिज्ञात करना व्यवहार्य नहीं है, इसलिए प्राधिकारी ने उत्पाद के सीमित समूह/रेंज के संबंध में, जिसमें समान उत्पाद शामिल है (अर्थात् सभी प्रकार के विस्कस फिलामेंट यार्न, 150 डेनियर से कम और अधिक दोनों सहित) तथा जिनके संबंध में आवश्यक सूचना उपलब्ध है, की जांच की है।

36. इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया है कि वर्ष 2001-2002 के संदर्भ में तुलना नहीं की जानी चाहिए क्योंकि उस अवधि में उद्योग अन्य बातों के साथ-साथ चीन से पाटन, उपभोक्ताओं द्वारा प्रमुख वस्त्र बाजारों में हड़ताल और गुजरात में भारी भूकंप का सामना कर रहा था। वर्ष 2001-2002 को शामिल न करने के उसके दावे के समर्थन में यूरोपीय आयोग की पद्धति का भी उदाहरण दिया गया है। दूसरी ओर, इस प्रकार के तर्क दिए गए हैं कि आधार वर्ष के संबंध में यदि घरेलू उद्योग का कार्य निष्पादन देखा जाए तो पता चलता है कि उसे अधिक क्षति नहीं हुई है। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के दावों की जांच की है और जांच के पश्चात् इस तथ्य की पुष्टि की है कि पाटन अवधि सहित चार वर्ष की अवधि के दौरान प्राधिकारी घरेलू उद्योग के निष्पादन की निरंतर तुलना करते रहे हैं और इसलिए वर्ष 2001-2002 को शामिल न करना उचित नहीं होगा। इसके अतिरिक्त, यह भी स्पष्ट किया गया कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की तुलना क्षति अवधि, जिसमें जांच अवधि और पूर्ववर्ती 3 वर्ष शामिल हैं, के दौरान विभिन्न मानदण्डों की प्रवृत्ति से की जाती है। इस प्रकार, केवल जांच अवधि और आधार वर्ष के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की तुलना में विभिन्न संकेतकों की प्रवृत्ति अधिक महत्वपूर्ण होती है। इस जांच में, घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन का विश्लेषण करते समय, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के इस निवेदन कि वर्ष 2001-2002 के दौरान चीन जन.गण. से कथित पाटन सहित विभिन्न कारकों के कारण उसके निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था, को ध्यान में रखा है।

37. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II (iv) के अनुसार ऐसे और संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डाल सकते हैं जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि।

घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा, बिक्री कारोबार और बाजार हिस्सा

38. नीचे दी गई तालिका से यह नोट किया जा सकता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में निरंतर वृद्धि हुई है और क्षति अवधि के दौरान उसमें 20% वृद्धि हुई है। तथापि, यह नोट किया गया है

उसी अवधि के दौरान बिक्री कारोबार में मात्रा में वृद्धि के अनुरूप वृद्धि नहीं हुई है और पिछले 2 वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान उसमें मामूली गिरावट आई है। उपर्युक्त विश्लेषण से यह मालूम होता है कि समान अवधि के दौरान कीमत अवमूल्यन के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में गिरावट आई है।

39. कुल मांग में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से के संबंध में यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग के हिस्से में क्षति अवधि के दौरान केवल मामूली गिरावट आई है जबकि संबद्ध देश के हिस्से में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

| | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जन. से दिस., 04 |
|------------------------------|--------|----------|----------|----------|-----------------|
| बिक्री | मी. टन | 18146.32 | 18658.15 | 19430.49 | 21688.53 |
| प्रवृत्ति | | 100 | 103 | 107 | 120 |
| मांग | मी. टन | 32624 | 37358 | 35305 | 39460 |
| प्रवृत्ति | | 100 | 115 | 108 | 121 |
| घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा | % | 55.62 | 49.94 | 55.04 | 54.96 |

बिक्री कारोबार

40. हालांकि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री कारोबार में 25 प्रतिशत तक वृद्धि हुई थी परन्तु 2002-03 के बाद जांच अवधि तक यह स्थिर रहा। यह तथ्य कि 2002-03 के पश्चात जांच अवधि तक बिक्री की मात्रा में वृद्धि हुए बगैर पर्याप्त रूप से बढ़ी हुई से यह मालूम होता है कि घरेलू उद्योग के बिक्री कारोबार में विकृति आई। यह उल्लेख किया जा सकता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। पूर्वोक्त के आधार पर यह समझा जाता है कि घरेलू उद्योग को बिक्री की मात्रा में वृद्धि के अनुरूप अपने बिक्री कारोबार में वृद्धि न कर पाने के कारण पर्याप्त क्षति हुई है।

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर, 04 |
|-------------------------------|----------|---------|---------|---------|----------------------|
| बिक्री मूल्य - नेट ऑफ एक्साइज | | | | | |
| घरेलू - पी यू सी | लाख रुपए | **** | **** | **** | **** |
| सूची | सूचीबद्ध | 100 | 127 | 123 | 123 |
| निर्यात | लाख रुपए | **** | **** | **** | **** |
| सूची | | 100 | 102 | 169 | 159 |
| कुल बिक्री | लाख रुपए | **** | **** | **** | **** |
| सूची | | 100 | 126 | 124 | 125 |

लाभ और नकदी प्रवाह

41. आंकड़ों से यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग के लाभों में पर्याप्त कमी आई है। यह दावा किया गया है कि यदि संबद्ध देशों से पाटित आयात इस स्तर पर नहीं रोके गए तो इसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग के लाभ पूरी तरह समाप्त हो जाएंगे। वस्तुतः यह नोट किया गया है कि प्रस्तावित जांच अवधि में कारोबार के सभी भागों में घरेलू उद्योग को वित्तीय धाटे हुए जो कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है:-

| | | | | | |
|------------------|----------|---------|---------|---------|--------|
| ब्याज पूर्व लाभ | लाख रुपए | -96.65 | 7694.67 | 4390.10 | 594.85 |
| ब्याज | लाख रुपए | 1419 | 980 | 729 | 638 |
| ब्याज पश्चात लाभ | लाख रुपए | -1516 | 6714 | 3661 | -43 |
| हास | लाख रुपए | 714 | 733 | 933 | 831 |
| नकद लाभ | लाख रुपए | -801.93 | 7447.63 | 4594.47 | 787.95 |

| | | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर ,04 |
|-------------------------|----------|---------|---------|---------|----------------------|
| ब्याज पूर्व लाभ | सूचीबद्ध | -100 | 7961 | 4542 | 615 |
| ब्याज पश्चात लाभ | सूचीबद्ध | -100 | 443 | 242 | -3 |
| लगाई गई पूंजी | सूचीबद्ध | 100 | 91 | 98 | 126 |
| प्राप्ति - ब्याज पूर्व | सूचीबद्ध | -100 | 8757 | 4637 | 489 |
| प्राप्ति - ब्याज पश्चात | सूचीबद्ध | -100 | 487 | 247 | -2 |

| | | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर ,04 |
|---------|----------|---------|---------|---------|----------------------|
| नकद लाभ | सूचीबद्ध | -100 | 929 | 573 | 98 |

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर ,04 |
|--------------------|----------|---------|---------|---------|----------------------|
| लाभ/हानि | | | | | |
| 120 डेनियर से कम | सूचीबद्ध | -100 | 243 | 114 | -54 |
| 120 डेनियर | सूचीबद्ध | -100 | 599 | 312 | 17 |
| 121 से 150 डेनियर | सूचीबद्ध | -100 | 1234 | 812 | 189 |
| 150 डेनियर से अधिक | सूचीबद्ध | -100 | 528 | 433 | 178 |

42. इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग की लाभकारिता लगातार कम होती रही है और घरेलू उद्योग को अब जांच अवधि की अंतिम तिमाही तक वित्तीय घाटा होना शुरू हो गया है जिसे निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है:-

| लागत प्रति किलोग्राम | | 1 st तिमाही | 2 nd तिमाही | 3 rd तिमाही | 4 th तिमाही |
|------------------------------|----------|------------------------|------------------------|------------------------|------------------------|
| इंडियन रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | 101 | 103 | 104 |
| केशोराम रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | 100 | 101 | 102 |
| एन आर सी लि० | सूचीबद्ध | 100 | 100 | 101 | 102 |
| कुल घरेलू उद्योग | सूचीबद्ध | 100 | 100 | 102 | 102 |
| बिक्री कीमत (नेट ऑफ एक्साइज) | | | | | |
| इंडियन रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | 98 | 92 | 90 |
| केशोराम रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | 98 | 94 | 92 |
| एन आर सी लि० | सूचीबद्ध | 100 | 97 | 94 | 91 |
| कुल घरेलू उद्योग | सूचीबद्ध | 100 | 97 | 93 | 90 |

| लाभ/(हानि) प्रति किग्रा. | सूचीबद्ध | | | | |
|-----------------------------|----------|-----|-----|------|------|
| इंडियन रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | 72 | -9 | -50 |
| केशोराम रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | -11 | -368 | -537 |
| एन आर सी लि० | सूचीबद्ध | 100 | 37 | -50 | -105 |
| कुल घरेलू उद्योग | सूचीबद्ध | 100 | 58 | -37 | -88 |
| बेची गई मात्रा | सूचीबद्ध | | | | |
| इंडियन रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | 89 | 113 | 135 |
| केशोराम रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | 78 | 92 | 106 |
| एन आर सी लि० | सूचीबद्ध | 100 | 108 | 103 | 171 |
| कुल घरेलू उद्योग | सूचीबद्ध | 100 | 93 | 105 | 140 |
| लाभ/(हानि) | | | | | |
| इंडियन रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | 64 | -10 | -67 |
| केशोराम रेयॉन | सूचीबद्ध | 100 | -9 | -337 | -568 |
| एन आर सी लि० | सूचीबद्ध | 100 | 40 | -52 | -180 |
| कुल घरेलू उद्योग | सूचीबद्ध | 100 | 54 | -38 | -123 |

43. क्षति की अवधि के दौरान घरेलू जैसे उत्पाद के उत्पादन में वृद्धि के मुद्दे के संबंध में यह दावा किया गया है कि आवेदकों को प्रस्तावित जांच अवधि में अभी अधिक वित्तीय घाटा हुआ होता यदि उन्होंने उत्पादन की मात्राओं में वृद्धि नहीं की होती परन्तु उन्होंने वर्तमान स्तर से कीमतें कम कर दी थीं।

44. घरेलू उद्योग के नकदी प्रवाह की स्थिति घरेलू जैसे उत्पाद के लिए अलग नहीं की जा सकी क्योंकि घरेलू उद्योग एक बहु-उत्पाद कंपनी है। तथापि, समान उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग के नकद लाभों का निर्धारण किया गया है और इससे लाभों के समान एक जैसी प्रवृत्ति मालूम होती है। घरेलू उद्योग के नकद लाभ विकृत हो गए हैं जिसे निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकेगा:-

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर, 04 |
|---------|-------------|---------|---------|---------|-------------------------|
| नकद लाभ | लाख रुपए | **** | **** | **** | **** |
| सूची | | -100.00 | 928.71 | 572.92 | 98.26 |

45. यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग (विशेष रूप से भारतीय रेयॉन) 2002-03 में अत्यधिक लाभ अर्जित कर रहा था और इसी कारणवश बाद की कीमतों में गिरावट आई। इस कारण से प्राधिकारी ने अधिक लंबी अवधि (1995-96 से) के लिए भारतीय रेयॉन के उत्पाद (अर्थात् समग्र रूप से वी एफ आई) के लाभों से संबंधित आंकड़ों की जांच की है और यह मालूम हुआ था कि कंपनी के 2002-03 के लाभों की अपेक्षा पहले के लाभ वस्तुतः अधिक थे। इसलिए यह नहीं समझा जा सकता कि उद्योग की 2002-03 में कीमतें अधिक थीं।

| पी यू सी पर कंपनी- वार लाभ प्रदत्त | | | | | |
|---------------------------------------|----------|---------|---------|---------|----------------|
| पी बी टी | | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
| इंडियन रेयॉन | सूचीबद्ध | -100 | 346 | 187 | 31 |
| केशोराम रेयॉन | सूचीबद्ध | -100 | 794 | 420 | -123 |
| एन आर सी लि० | सूचीबद्ध | -100 | 575 | 331 | -52 |
| कुल घरेलू उद्योग | सूचीबद्ध | -100 | 443 | 241 | -3 |

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

46. संबद्ध देशों से आयातों के फलस्वरूप भारतीय बाजार में कीमतें कम हो रही हैं और कम कीमत पर बिक्री की जा रही है। चीन जनवादी गणराज्य से समग्र रूप से आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की गैर-क्षति कारक कीमत से काफी कम है। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतें कम हुई हैं जिन्हें घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों की प्रवृत्तियों से देखा जा सकता है। यह प्रवृत्ति तब अधिक चिन्हित होती है जब कारोबार-वार और ग्रेड-वार कीमत प्रवृत्तियों की जांच की जाती है। क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लागत ढाँचे में कोई अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। लागू सीमा-शुल्कों सहित संबद्ध देशों से पहुँच कीमत बिक्री प्राप्ति तथा घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारक कीमत से कम है।

उत्पादन, क्षमता और क्षमता उपयोग में वास्तविक और संभावित गिरावट

47. यह प्रस्तुत किया गया है कि घरेलू उद्योग के संयंत्र का उपयोग बाजार में समर्पित प्रयासों के कारण इष्टतम स्तर पर रहा था और उत्पाद अधिक से अधिक हुआ था। घरेलू जैसे उत्पादों का उत्पादन से आधार वर्ष की तुलना में मामूली सा सकारात्मक रुख मालूम होता है परन्तु यह नोट किया जाता है कि 2002-03 से जांच अवधि तक घरेलू उद्योग का उत्पादन इस तथ्य के बावजूद स्थिर रहा है कि अतिरिक्त क्षमता मौजूद थी और उसी अवधि के दौरान मांग भी पर्याप्त थी। जहाँ तक क्षमता उपयोग का संबंध है यह नोट किया जाता है कि यद्यपि संयंत्र क्षमता उपयोग काफी किया गया है परन्तु संबद्ध वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग कम इष्टतम रहा है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग बिक्री कीमतों में कमी के बावजूद उत्पादन में वृद्धि के समनुपात में अपनी बिक्रियों को नहीं बढ़ा सका है।

| | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी, 04 से दिसम्बर, 04 |
|-----------------------------------|---------|---------|---------|-----------------------------|
| क्षमता | 37500 | 37500 | 37500 | 37500 |
| संबद्ध वस्तुओं का उपयोग | 17793 | 21038 | 21907 | 21464 |
| सभी वस्तुओं का उत्पादन | 29479 | 33898 | 36056 | 36451 |
| वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन (%) | | 15 | 6 | 1.09 |
| क्षमता उपयोगिता संबद्ध वस्तुएं | 47 | 56 | 58 | 58 |
| प्लांट उपयोगिता | 79 | 90 | 96 | 97 |

उत्पादकता

48. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में जांच अवधि के दौरान पर्याप्त वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की प्रति कर्मचारी उत्पादकता से उत्पादन की वृद्धि और कर्मचारी की संख्या में पर्याप्त कमी के कारण सकारात्मक रुख मालूम होता है। अतः यह निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को

इस मानदण्ड के कारण क्षति नहीं हुई है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि उत्पादकता में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग की लाभकारिता क्षति की अवधि में कमी हुई थी।

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर, 04 |
|--------------------------|--------|---------|---------|---------|----------------------|
| कर्मचारी | संख्या | 9716 | 9112 | 9288 | 8298 |
| उत्पादकता प्रति दिन | मी.टन | 59.31 | 70.13 | 73.02 | 71.55 |
| उत्पादकता प्रति कर्मचारी | मी.टन | 1.83 | 2.31 | 2.36 | 2.58 |

निवेशों और नियोजित पूंजी पर लाभ

49. यह मालूम होता है कि घरेलू उद्योग का नियोजित पूंजी पर लाभ 2002-03 के दौरान सकारात्मक बना परन्तु उसके बाद गंभीर रूप से विकृत हुआ।

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर 04 |
|---|----------|---------|---------|---------|---------------------|
| सकल स्थायी, परिसम्पत्तियाँ (वी एफ वाई प्रभाग) | सूचीबद्ध | 100 | 101 | 105 | 116 |
| निवल स्थायी परिसम्पत्तियाँ (वी एफ वाई प्रभाग) | सूचीबद्ध | 100 | 100 | 99 | 113 |
| कार्यशील पूंजी (वी एफ वाई प्रभाग) | सूचीबद्ध | 100 | 107 | 168 | 200 |
| लगाई गई पूंजी (वी एफ वाई प्रभाग) | सूचीबद्ध | 100 | 102 | 112 | 130 |
| लगाई गई पूंजी प्रति किग्रा. | सूचीबद्ध | 100 | 88 | 91 | 105 |
| घरेलू बिक्रियों पर लगाई गई पूंजी | सूचीबद्ध | 100 | 91 | 98 | 126 |
| लगाई गई पूंजी पर लाभ | सूचीबद्ध | -100 | 487 | 247 | -2 |
| लगाई गई पूंजी पर प्राप्ति | सूचीबद्ध | -100 | 8757 | 4637 | 489 |

रोजगार और वेतन

50. घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में तेजी से गिरावट आई है। वास्तव में पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान पर्याप्त गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के वेतनों से क्षति की अवधि के दौरान सामान्य वृद्धि मालूम होती है।

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर 04 |
|------------------------------------|---------|----------|----------|----------|------------------------|
| रैजगार | Nos | 9832 | 9220 | 9360 | 8298 |
| मजदूरी | Rs.Lacs | 10060.71 | 12025.53 | 11777.67 | 12503.12 |
| रैजगार - सूचीबद्ध | | 100.00 | 93.78 | 95.20 | 84.40 |
| मजदूरी - सूचीबद्ध | | 100.00 | 119.53 | 117.07 | 124.28 |
| कुल लागत के % के रूप में मजदूरी | % | 19.93 | 20.96 | 19.20 | 20.13 |

समान सूचियां

51. कार्यकारी को यह मालूम हुआ है कि घरेलू उद्योग की तैयार वस्तुओं का औसत स्टॉक अंतर्ग्रस्त अवधि में बढ़ा था। उत्पादन के प्रतिशत के रूप में स्टॉक और बिक्री दिवसों की संख्या के लिए पर्याप्त स्टॉक में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग बाजार में बढ़े हुए उत्पादन की बिक्री नहीं कर सका जिसके फलस्वरूप माल सूचियों में बढ़ोतरी होती गई। यह घरेलू उद्योग द्वारा कीमत घटाने के बाद हुआ।

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर 04 |
|--|-------|----------|----------|----------|---------------------------|
| आरंभिक स्टॉक | एम टी | 1288.64 | 392.36 | 2269.99 | 3562.03 |
| अंतिम स्टॉक | एम टी | 392.36 | 2269.99 | 3714.85 | 2391.56 |
| घरेलू उद्योग का उत्पादन | एम टी | 17793.00 | 21038.00 | 21907.22 | 21464.85 |
| औसत स्टॉक | एम टी | 840.50 | 1331.18 | 2992.42 | 2976.79 |
| बिक्रियां प्रति दिन | एम टी | 49.72 | 51.12 | 53.23 | 59.42 |
| बिक्री दिवसों की संख्या के लिए पर्याप्त स्टॉक | दिन | 16.91 | 26.04 | 56.21 | 50.10 |
| उत्पादन के % के रूप में स्टॉक | % | 4.72 | 6.33 | 13.66 | 13.87 |

पूंजी निवेशों को जुटाने की योग्यता

52. रिकार्डों की जांच करने के पश्चात यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी के सामने पूंजी जुटाने के लिए घरेलू उद्योग की कोई अयोग्यता नहीं आई। इसलिए, प्राधिकारी इस मानदण्ड के कारण किसी क्षति के होने का प्रस्ताव नहीं करते।

वृद्धि

53. जैसाकि निम्न तालिका में दर्शाया गया है कि घरेलू उद्योग को बहुत से मानदण्डों में नकारात्मक वृद्धि हुई है। हालांकि, बिक्री मात्राओं, उत्पादन और बिक्री मात्राओं में बढ़ोतरी में सकारात्मक वृद्धि हुई है। परन्तु बिक्री की मात्रा में वृद्धि स्थिर अथवा मामूली नकारात्मक रही है।

बिक्री की मात्राओं में नकारात्मक वृद्धि के बावजूद बिक्री की मात्राओं और उत्पादन में सकारात्मक वृद्धि से घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री की कीमतों में पर्याप्त कमी मालूम होती है। तथापि, बिक्री की कीमतों में कमी करने से घरेलू उद्योग के लाभों, नकदी प्रवाह और आर ओ आई पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

| विवरण | इकाई | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जनवरी से दिसम्बर 04 |
|------------------------------------|------|---------|---------|---------|---------------------|
| गत वर्ष की तुलना में वृद्धि | | | | | |
| उत्पादन | % | | 18.24 | 4.13 | -2.02 |
| घरेलू बिक्री मात्रा | % | | 2.82 | 4.14 | 11.62 |
| घरेलू बिक्री मात्रा | % | | 27.26 | -3.51 | 0.50 |
| संबद्ध वस्तुओं पर लाभ | % | | 542.92 | -45.48 | -101.18 |
| घरेलू बिक्री पर नकद लाभ | % | | 1028.71 | -38.31 | -82.85 |
| लगाई गई पूंजी पर प्राप्ति | % | | 57.63 | -28.81 | -26.98 |
| कर्मचारी की संख्या | % | | -8.22 | 1.52 | -11.35 |
| मजदूरी प्रति किग्रा. | % | | 3.95 | -7.92 | 5.01 |
| औसत बिक्री कीमत/किग्रा. | % | | 23.77 | -8.06 | -9.26 |
| एन एस आर-पी यू सी- कीमत/किग्रा. | % | | 24.00 | -9.09 | -9.41 |

(ज) वास्तविक क्षति का खतरा

54. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के संबंध में वास्तविक क्षति के अतिरिक्त घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति के खतरे की जांच की है।

इस संबंध में नियमों के अनुबंध II में निम्नानुसार प्रावधान है:-

'वास्तविक क्षति के खतरे का निर्धारण' केवल आरोपों, अनुमानों अथवा दूरगामी संभावना पर नहीं बल्कि तथ्यों पर आधारित होगा। उन परिस्थितियों में ऐसे परिवर्तन, जिनसे ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी जिसमें पाटन से क्षति होगी, को स्पष्ट रूप से पूर्वानुमानित और आसन्न समझा जाना चाहिए। वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी से संबंधित निर्धारण करने में निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ ऐसे कारकों पर विचार करेगा और;

(क) पर्याप्त रूप से बढ़े हुए आयातों की संभावना की सूचना देते हुए भारत में पाटित आयातों की वृद्धि की पर्याप्त दर;

(ख) किन्हीं अतिरिक्त निर्यातों को खपाने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार को पर्याप्त रूप से बढ़े हुए पाटित आयातों की संभावना का संकेत देते हुए निर्यात की क्षमता में पर्याप्त रूप से मुक्त रूप में निपटान योग्य अथवा कोई आसन्न पर्याप्त वृद्धि;

(ग) क्या आयात उन कीमतों पर किए जा रहे हैं जिनसे घरेलू कीमतों पर कम किए जाने अथवा दबाव डालने वाले पर्याप्त प्रभाव पड़ेंगे और अतिरिक्त आयातों के लिए मांग बढ़ने की संभावना होगी; और

(घ) वस्तुओं की माल सूचियों की जांच की जाए।

55. इस मामले में यह समझा जाता है कि:-

(क) संबद्ध देश से आयातों की मात्रा में पूर्णतः पर्याप्त और तेजी से वृद्धि हुई। इस वृद्धि को घरेलू उद्योग द्वारा अपनी सामग्री कम कीमतों पर बेचने के प्रयासों के बावजूद पर्याप्त समझी जाती है। घरेलू उद्योग द्वारा यह दावा किया गया है कि यह वृद्धि और अधिक हो गई होती यदि घरेलू उद्योग ने समान कीमतें प्रस्तुत करके उसे कम करने अथवा उचित कीमत वृद्धियां न करके (वित्तीय घाटों की लागत पर) के प्रयास नहीं किए होते।

(ख) संबद्ध देश से आयातों में संभावित वृद्धि इस तथ्य के कारण पर्याप्त रही है कि संबद्ध देश में संबद्ध वस्तु की खपत उत्पादन क्षमता की तुलना में सीमित रही है।

(ग) हालांकि संबद्ध देश से पाटित आयातों के संबंध में कीमत कटौती बहुत अधिक नहीं है परन्तु वह इस तथ्य के कारण हो सकती है कि घरेलू उद्योग कीमतें दबी हुई हैं। इसके अतिरिक्त यह नोट किया जाता है कि किसी भी समय घरेलू उत्पाद और आयातित चीनी उत्पाद के बीच कोई सकारात्मक कीमत अंतर है। अंतर्ग्रस्त उत्पाद के स्वरूप के कारण घरेलू उत्पाद और आयातित उत्पाद के बीच कीमत का अंतर उपभोक्ताओं को स्वीकार्य नहीं हो सकता और घरेलू उद्योग पुनः कीमत कम करने के लिए निरंतर दबाव में रहा होगा।

(घ) संबद्ध देशों में उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमताएं उनकी संबंधित घरेलू मांग की अपेक्षा बहुत अधिक मालूम होती है। इस संबंध में प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत साक्ष्यों से यह नोट किया जाता है कि चीन में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की क्षमता 2 लाख एम टी से अधिक है जो न केवल विश्व में सर्वाधिक है बल्कि चीन में मांग से पर्याप्त रूप से अधिक भी है जिसे निम्न तालिका से देखा जा सकता है:-

| वर्ष | 2001 | 2002 | 2003 | 2004 |
|-------------------------|--------|--------|--------|--------|
| उत्पादन (मी.टन) | 125389 | 145042 | 184639 | 200393 |
| घरेलू बिक्रियाँ (मी.टन) | 109416 | 115618 | 131477 | 157159 |
| निर्यात (मी.टन) | 23692 | 394412 | 46579 | 40466 |

स्रोत: सी सी एफ ई आई. कॉम

वास्तव में यह दावा किया गया है कि चीन में अतिरिक्त क्षमता के कारण उत्पादकों को कीमतें कम करने के निर्देश दिए गए हैं। ऐसा एक वैबसाइट निम्न प्रकार है:-

"25 नवम्बर को विस्कोस फिलामेंट उद्योग की बैठक बीजिंग में चीन कैमिकल फाइबर एसोसिएशन की विस्कोस समिति द्वारा आयोजित की गई थी। विस्कोस फिलामेंट की सी ई ओ एस ने कार्यान्वयन उपायों के साथ उत्पादन कम करने से संबंधित कड़े विनियम बनाए। उत्पादन में कटौती 2005 के एच-1 तक 20 के.टी. और सारे वर्ष लिए 35 के. टी. की गई। उन्होंने यह भी समझा कि कीमत परिवेक्षण तंत्र को स्पष्ट रूप से निर्धारित पुरस्कार और दंड उपायों के साथ और उत्पादन कटौती दर के साथ जोड़कर पुनः प्रवर्तित किया जाए।

56. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि :

(क) चीन में उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमता माँग से अधिक है ।

(ख) चीनी उत्पादक उत्पादन को प्रतिबंधित करने के दबाव में हैं, जिससे उच्च स्थिर लागतें उत्पन्न होंगी ।

उपर्युक्त के मद्देनजर, यह प्रतीत होता है कि संबद्ध देश में उत्पादकों पर अधिक से अधिक निर्यात करने का अत्यधिक दबाव है ताकि उनकी उत्पादन लागत न्यून स्तर पर रहे ।

(ड.) तथापि घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री कीमतों में भारी कमी किए जाने के बावजूद घरेलू उद्योग के पास इस वस्तु की वस्तु सूची में भारी वृद्धि प्रदर्शित होती है, तथापि आवेदकों ने यह दावा किया है कि चीन के उत्पादकों के पास उच्च वस्तु सूची है ।

निष्कर्ष

57. संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप से और कुल आयातों के संबंध में तथा भारत में संबद्ध वस्तु की कुल माँग की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है । पाटित आयातों का अत्यधिक प्रतिकूल कीमत प्रभाव पड़ा है क्योंकि पाटित आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की कीमतें कम हुई हैं । इसके अलावा, इन पाटित आयातों से जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में कटौती हुई है । कीमत कटौती का मार्जिन अधिक नहीं था क्योंकि घरेलू बिक्री कीमतें पहले ही कम हैं । घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण बाजार हिस्से में भारी कमी के कारण नुकसान उठाना पड़ा है । यद्यपि घरेलू उद्योग की उच्च बिक्री मात्रा एवं उत्पादन रहा है, तथापि बिक्री मूल्य, लाभ, आरओआई और नकद प्रवाह की दृष्टि से घरेलू उद्योग की वृद्धि ऋणात्मक रही थी । इसके अलावा, घरेलू उद्योग की वस्तु सूचियों में क्षति अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है । इसके अलावा, इस तथ्य के बावजूद क्षति अवधि के अधिकांश हिस्से में बिक्री कारोबार स्थिर रहा कि इसी अवधि के दौरान माँग और बिक्री मात्रा में भारी वृद्धि हुई, जिससे घरेलू उद्योग की अपेक्षाकृत कम बिक्री प्राप्तियों का संकेत मिलता है । इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई थी । यह भी नोट किया जाता है कि लाभप्रदता में इतनी कमी हुई कि जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को वित्तीय नुकसान उठाना पड़ा है । लाभप्रदता में तेजी से आई गिरावट के परिणामस्वरूप घाटे हुए हैं जिसे जाँच अवधि के तिमाही वार विश्लेषण से देखा जा सकता है । आगे इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के निवेश पर आय (आरओआई) की स्थिति नकद लाभ की स्थिति भी खराब हुई है । क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को रोजगार में भी महत्वपूर्ण रूप से घाटा हुआ है । घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग और प्रति कर्मचारी उत्पादकता की दृष्टि से सुधार हुआ है । तथापि, इस तथ्य को देखते हुए इसे संतोषजनक नहीं माना जा सकता है कि क्षति अवधि के दौरान अनेक मापदंडों से काफी प्रतिकूल रुझान प्रदर्शित होते हैं जिनसे घरेलू उद्योग को जाँच अवधि के दौरान वित्तीय क्षति हुई है । वास्तविक क्षति के खतरे के संबंध में मानदंडों के बारे में, यह नोट किया जाता है कि नियमावली के अनुबंध ॥ के अनुसार कई मापदंडों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति के खतरे के बारे में सकारात्मक प्रगति प्रदर्शित होती है । उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को जाँच अवधि के दौरान वास्तविक क्षति हुई है और उसे वास्तविक क्षति का खतरा भी है ।

प्रकटन के पश्चात, अनेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह दावा किया है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति नहीं हुई है। यह तर्क प्राथमिक रूप से इस तथ्य पर आधारित है कि यदि आधार वर्ष और जाँच अवधि के क्षति संबंधी मापदंडों की तुलना की जाए तो घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है। प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों की जाँच के पश्चात यह मानते हैं कि आधार वर्ष की तुलना केवल जाँच अवधि से करना उचित नहीं है। ऐसी प्रक्रिया से बीच में आने वाली अवधियों की सूचना व्यर्थ हो जाएगी। इसके अलावा यदि बीच की अवधि के लिए सूचना पर विचार किया जाए तो यह देखा जाएगा कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में आधार वर्ष के बाद उल्लेखनीय सुधार हुआ है। तथापि, इसके निष्पादन में वर्ष 2002-2003 के बाद पुनः विकृति आई है। इसके अलावा, जैसा कि प्रकटन विवरण में उल्लिखित है घरेलू उद्योग को वर्ष 2001-2002 में अनेक कारणों से क्षति हो रही थी। इसके अतिरिक्त कारण से केवल 2001-2002 और जाँच अवधि के बीच घरेलू उद्योग के निष्पादन की तुलना करना उचित नहीं होगा। वस्तुतः यदि आधार वर्ष की उपेक्षा इस कारण से की गई है कि घरेलू उद्योग को अनेक कारकों के कारण क्षति हुई है यह देखा जाएगा कि वर्ष 2002-2003 के पश्चात घरेलू उद्योग की स्थिति खराब हुई है। अतः संगत प्रक्रिया के मामले में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति संबंधी निष्कर्ष निकालते समय संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान प्रवृत्तियों पर विचार किया है और न कि केवल आधार वर्ष और जाँच अवधि के लिए।

झ. कारणात्मक संबंध

(क) प्रस्तावना

58. घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण संबंधी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अनुसार तथा यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध 11 क पैरा (v) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव और उस उद्योग की स्थिति पर इनके प्रभाव की जांच की है। पाटित आयातों से इतर ज्ञात कारक, जिनसे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती थी, की भी यह सुनिश्चित करने के लिए जांच की गयी थी कि इन अन्य कारकों से हुई संभव क्षति के लिए पाटित आयातों को उत्तरदायी न माना जा रहा हो।

(क) पाटित आयातों का प्रभाव

59. संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप से और कुल आयातों के संबंध में तथा भारत में संबद्ध वस्तु की कुल माँग की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों का अत्यधिक प्रतिकूल कीमत प्रभाव पड़ा है क्योंकि पाटित आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की कीमतें कम हुई हैं। इसके अलावा, इन पाटित आयातों से जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में कटौती हुई है। कीमत कटौती का मार्जिन अधिक नहीं था क्योंकि घरेलू बिक्री कीमतें पहले ही कम हैं। यद्यपि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को बाजार हिस्से में एक मामूली गिरावट का सामना करना पड़ा है तथापि, संबद्ध देशों से पाटित आयातों के परिणामस्वरूप बिक्री मूल्य, लाभों, निवेश पर आय और नकद प्रवाह की दृष्टि से घरेलू उद्योग की ऋणात्मक वृद्धि हुई है। इसके अलावा यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों में वर्ष 2002-2003 के उत्तरार्द्ध के दौरान वृद्धि हुई है, जब घरेलू उद्योग ने अपनी कीमतें बढ़ाई हैं। यह भी नोट

किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा कीमतें घटाने के बाद इन आयातों में कमी हुई है। आयातों में गिरावट की प्रवृत्ति जाँच अवधि के भीतर पाई गई है और तब भी यह प्रवृत्ति रही है जब घरेलू उद्योग ने संपूर्ण जाँच अवधि में कीमतों को घटाया है। इससे यह तथ्य सिद्ध होता है कि जब भी घरेलू उद्योग ने कीमतें बढ़ाई है आयातों में वृद्धि हुई है और जब भी घरेलू उद्योग ने कीमतें घटाई हैं संबद्ध देशों से पाटित आयातों में कमी हुई है। इसके अलावा यह भी देखा जाता है कि जब भी घरेलू उद्योग ने कीमतें बढ़ाई है उसकी लाभप्रदता में वृद्धि हुई है। यद्यपि इसकी वस्तु सूची में भी उसी अनुपात में वृद्धि हुई है और उसका बाजार हिस्सा कम हुआ है। तथापि, जब भी घरेलू उद्योग ने कीमतें घटाई हैं, उसकी लाभप्रदता की स्थिति खराब हुई है। लाभप्रदता में इस हद तक कमी आई है कि घरेलू उद्योग को जाँच अवधि के दौरान वित्तीय नुकसान हुआ है। वित्तीय मानदंडों में विकृति तिमाही वार आधार पर जाँच से स्पष्ट है। अतः वर्ष 2002-2003 में सुधार के बाद घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में कमी संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई प्रतीत होती है।

अन्य कारकों के प्रभाव

(क) अन्य घरेलू उत्पादकों का निष्पादन

60. आवेदकों के अलावा जाँच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का एक अन्य घरेलू उत्पादक था। यद्यपि उन्होंने निर्यातक प्रश्नावली के ढंग एवं तरीके से सूचना प्रस्तुत नहीं की है, तथापि प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध सीमित सूचना की जाँच से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जाँच अवधि के दौरान उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ है और उनके प्रचालनगत निष्पादन में गिरावट आई है।

(ख) माँग का संकुचन और खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन

61. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और न ही इस संबंध में कोई तथ्यपूर्ण आरोप है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वैकल्पिक प्रतिस्पर्धी उत्पाद है। तथापि, विचाराधीन उत्पाद और इन वैकल्पिक प्रतिस्पर्धी उत्पाद लम्बे समय से एक साथ बाजार में हैं। चूंकि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की माँग में भारी वृद्धि हुई है और यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वैकल्पिक उत्पादों से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है।

(ग) पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा एवं कीमतें

62. प्राधिकारी ने विभिन्न स्रोतों से आयातों की जाँच की है जिनमें हैं- डीजीसीआईएण्डएस, गौण स्रोतों, जेएनपीटी से सीमाशुल्क पत्तन आंकड़े, सीमाशुल्क एवं निर्यातक उत्तर आंकड़ों से प्राप्त सूचना शामिल है। यह देखा जाता है कि अन्य संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा यूक्रेन समेत व्यक्तिगत रूप से नगण्य हैं और इसलिए प्राधिकारी ने इन आधारों पर यूक्रेन के विरुद्ध जाँच को समाप्त कर दिया है कि यूक्रेन से आयात नगण्य हैं। अन्य मामले में यह नोट किया जाता है कि अन्य देशों से आयातों में वृद्धि की कोई सुसंगत प्रवृत्ति प्रदर्शित नहीं हुई है तथा इनसे भारतीय बाजार में कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता प्रतीत नहीं होता है और इन्हें सर्वोत्तम स्थिति में भी छिटपुट आयात कहा जा सकता है।

(घ) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

63. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के लिए एक बाजार है जहाँ संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आयातित उत्पाद की बिक्री उन्ही वाणिज्यिक ग्रेडों और विनिर्देशनों की पूर्ति के लिए होती है जिन्हें घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु द्वारा पूरा किया जाता है। यह भी नोट किया जाता है कि आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुएं समान वस्तु हैं और इनका प्रयोग समान अनुप्रयोगों/अंतिम उपयोगों में किया जाता है।

(ङ) प्रौद्योगिकी में विकास, घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन और उत्पादकता

64. यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग के पास पुरानी प्रौद्योगिकी है। दस्तावेजों की जाँच और निर्यातक के संयंत्र के सत्यापन के बाद प्राधिकारी का विचार यह है कि संबद्ध वस्तु के उत्पादन की केवल दो प्रौद्योगिकियाँ अर्थात् पीएसवाई और सीएसवाई है। यह पाया गया है कि चीन तथा भारत के उत्पादकों के पास दोनों प्रौद्योगिकियाँ हैं। अतः यह सत्य नहीं है कि घरेलू उद्योग के पास पुरानी प्रौद्योगिकी है। आवेदकों के रिकार्डों की जाँच के आधार पर प्राधिकारी मानते हैं कि प्रौद्योगिकी में विकास, घरेलू उद्योग को क्षति का संगत कारक नहीं रहा है।

65. घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन के बारे में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निर्यातों में सुधार हुआ है, तथापि इनका अभी घरेलू उद्योग की कुल बिक्रियों में खास हिस्सा नहीं बनता है। आगे यह भी नोट किया जाता है कि विभिन्न आर्थिक संकेतकों के संबंध में विभिन्न निष्पादनों का निर्धारण केवल घरेलू बिक्रियों के संबंध में किया गया है।

66. उत्पादकता में सुधार के संबंध में, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में उत्पादन की वृद्धि के परिणामस्वरूप वृद्धि हुई है। जांच के आधार पर, प्राधिकारी यह मानते हैं कि तदनुसार उत्पादकता घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है।

(च) कारण निर्धारण का निष्कर्ष

67. वर्ष 2001-02 और जांच अवधि के बीच हुए आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि से मांग/खपत में आयातों के हिस्से में बढ़ोत्तरी हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप वर्ष 2001-02 और जांच अवधि के बीच घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है। आयातों के बाजार हिस्से में इन अवधियों के दौरान धीरे-धीरे वृद्धि हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भारी कमी हुई है। संबद्ध देशों से हुए आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग उत्पाद को ऐसी कीमत पर नहीं बेच पाया है जिससे वह अपनी उत्पादन लागत को वूसल करने और एक तर्कसंगत लाभ कमाने में सक्षम हो पाता। इससे घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय की दृष्टि से विकृति आई है। कुल मजदूरी और प्रति यूनिट उत्पादन मजदूरी में भी जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। परन्तु ये वृद्धि उस स्तर तक नहीं है जिससे घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ सकता हो। प्रकटन विवरण के बाद अनेक हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को क्षति अन्य कारकों

से हुई है। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमावली में प्राधिकारी के ध्यान में लाए गए ऐसी किसी कारक की जाँच प्राधिकारी द्वारा करना अपेक्षित है जिससे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो। तथापि पूर्ववर्ती पैराग्राफों में परीक्षित कारकों के अलावा किसी अन्य ऐसे विशिष्ट कारक जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो, को निर्दिष्ट प्राधिकारी के संज्ञान में नहीं लाया गया है।

68. उपर्युक्त विश्लेषण जिसमें घरेलू उद्योग की स्थिति पर सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव को पाटित आयातों के क्षतिकारी प्रभाव से समुचित रूप से अलग तथा विभक्त किया गया है, के मद्देनजर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ऐसे अन्य कारकों से यह तथ्य प्रतिवर्तित नहीं हुआ कि पायी गई वास्तविक क्षति के लिए पाटित आयातों को जिम्मेवार ठहराया जा सकता है।

69. अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि संबद्ध देशों के मूल के पाटित आयातों से पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

(अ) भारतीय उद्योग का हित

70. पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को क्षति हो रही है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की पुनःस्थिति लाना है जोकि देश के सामान्य हित में है।

71. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का ह्रास रुकेगा और उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी।

72. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लागू होने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी तरह से प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए इससे उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता अब भी आपूर्ति के दो या इससे अधिक स्रोत रख सकते हैं।

(ट) निष्कर्ष

73. प्राधिकारी पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि :-

(क) चीन जन. गण. से पैरा 7 में परिभाषित संबद्ध वस्तुओं का भारत को निर्यात इनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है;

(ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है; और वास्तविक क्षति के खतरे का सामना कर रहा है।

(ग) यह क्षति चीन जन. गण. से पाटित आयातों के कारण हुई है।

(घ) यूक्रेन के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 14 के अनुसार पाटनरोधी जांच समाप्त कर दी गई है क्योंकि उस देश से आयातों को नियमों के अर्थ के भीतर नगण्य पाया गया है।

74. प्राधिकारी घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए संबद्ध देशों से पीवीसी पेस्ट रेजिन के सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन उपरोक्त पैराग्राफ 31 में दर्शाया गया है। प्राधिकारी पाटन मार्जिन के बराबर या उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का प्रस्ताव करते हैं जिसे यदि लगाया जाता है तो उससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी। क्षति का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता कंपनी की क्षति रहित कीमत के साथ करने का प्रस्ताव है।

75. तदनुसार, प्राधिकारी सिफारिश करते हैं कि चीन जन. गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क शीर्ष 5403 के अंतर्गत आने वाले संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। पाटनरोधी शुल्क नीचे दी गई तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि और सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 54 में आने वाली निम्नलिखित दशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित, संबद्ध वस्तु के आयातों पर प्रति किग्रा. आयातों के पहुँच मूल्य का अंतर होगा।

| क्र. सं. | शीर्ष | वस्तुओं का विवरण | दिनिर्देशन | उद्गम का देश | निर्यात का देश | उत्पादक | निर्यातक | राशि | माप की इकाई | मुद्रा |
|----------|-------|------------------------|----------------|--------------|---------------------------|------------------------------------|----------|------|-------------|---------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) |
| 1 | 5403 | विस्कोस फिलामेंट यार्न | कोई दिनिर्देशन | कोई | चीन जन. गण. | मै. यीबीन प्रेस कं. लि. | कोई | 3.91 | कि. ग्रा. | अम. डा. |
| 2 | 5403 | विस्कोस फिलामेंट यार्न | कोई दिनिर्देशन | कोई | चीन जन. गण. | मै. यीबीन हीस्ट कं. लि. | कोई | 4.04 | कि. ग्रा. | अम. डा. |
| 3 | 5403 | विस्कोस फिलामेंट यार्न | कोई दिनिर्देशन | कोई | चीन जन. गण. | मै. जिनजियांग कैमिकल फाईबर कं. लि. | कोई | 4.82 | कि. ग्रा. | अम. डा. |
| 4 | 5403 | विस्कोस फिलामेंट यार्न | कोई दिनिर्देशन | कोई | चीन जन. गण. | उपयुक्त के अलावा कोई | कोई | 4.82 | कि. ग्रा. | अम. डा. |
| 5 | 5403 | विस्कोस फिलामेंट यार्न | कोई दिनिर्देशन | चीन जन. गण. | चीन जन. गण. को छोड़कर कोई | कोई | कोई | 4.82 | कि. ग्रा. | अम. डा. |

* 150 डेनियर तक के विस्कोस फिलामेंट यार्न (और इसके + -4% क अंतर के अनुमति प्राप्त) जिनमें 67 डेसिटेक्स से कम के मोनो फिलामेंट यार्न जिन्हें विस्कोस फिलामेंट यार्न या वीएफवाई के नाम से भी जाना जाता है, रेयोन फिलामेंट यार्न, आर्ट सिल्क यार्न, सेल्युलोज यार्न या रेयोन यार्न शामिल हैं तथा इनमें 100% विस्कोस यार्न से बने सभी यार्न जैसे रंजित यार्न, फ्लेट यार्न, माइक्रो फिलामेंट माइक्रोयार्न, ट्रिक्स्टे यार्न, (कढ़ाई वाले को छोड़कर), कढ़ाई वाले यार्न को छोड़कर वीएफवाई के दोहा/बहु प्लाई यार्न आदि, सिलाई धागा, फर यार्न, फायर रिटार्डेंट यार्न, इजीनियर्ड यार्न और एयर टेक्सचराइज्ड यार्न शामिल हैं।

76. इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अधीन सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के शुल्क शामिल होंगे।

77. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा शुल्क अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

78. प्राधिकारी इस निश्चयात्मक उपाय को जारी रखने, इसमें परिवर्तन करने या इसको समाप्त करने, जैसा इसमें अनुशंसित है, की आवश्यकता की इस अधिनियम के संगत प्रावधानों और इस संबंध में समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। प्राधिकारी द्वारा ऐसी समीक्षा के लिए कोई भी अनुरोध स्वीकार नहीं किया जाएगा, यदि यह अनुरोध किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय सीमा के भीतर नहीं किया जाता है।

क्रिस्टी एल. फेर्नांडेज, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 4th April, 2006

FINAL FINDINGS

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Viscose Filament yarn originating in or exported from China PR and Ukraine.

No. 14/23/2004-DGAD.—A. Procedure :

1. The procedure described below has been followed:-

(i) On 7th April 2005, the Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, announced a public notice (initiation notification) which was published in the Gazette of India with regards to the initiation of an anti dumping investigation concerning imports of viscose filament yarn originating in or exported from China PR and Ukraine (also referred to as subject countries). The Anti dumping proceeding was initiated following a petition received from Association of Man-Made Fibre Industry of India (AMFII) (the applicant) on behalf of the domestic industry representing a major proportion of the domestic production of said product. The application contained evidence of dumping of the said product and of material injury resulting there from, which was considered sufficient to justify the initiation of the proceedings.

(ii) Before initiation, the Authority notified the Embassies of subject countries in India about the receipt of fully documented application made by the applicant before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

(iii) According to sub rule (2) of the rule 6 supra, the Authority forwarded copy of the said public notice to the known

producers/exporters, importers, industry associations, embassies of the countries concerned and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing. Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation

(iv) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to all the known exporters and Embassies of subject countries in India. According to sub-rule (4) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the relevant questionnaire to all the known exporters and Embassies of subject countries in India and other interested parties. The Embassies of subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time

(v) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from subject countries.

1. Yibin Grace Co. Ltd, SiChuan Province, China PR
2. Baoding Swan Group, Baoding Hebei, China PR
3. Xinxiang Bailu Chemical, Henan Province, China PR
4. Jilin Chemical Fibre Group Co Ltd, Jilin City, China PR
5. Hangzhou B.P. Chemical Co. Ltd. Hangzhou, China PR
6. JSC "Cherkasskoye, Ukraine - 18013

(vi) Four exporters/producers have responded to the exporter's questionnaire and notice of initiation.

1. Yibin Grace Co. Ltd, SiChuan Province, China PR
2. Yibin Heist Fibre Co. Ltd, China PR
3. Xinxiang Chemical Fibre Co. Ltd, China PR
4. M/s. HMEI Thread Co. Ltd. China PR

(vii) A copy of initiation notification along with the importers questionnaire were also sent to the following importers.

1. Shah Trading Co. Mumbai-21
2. Vyapar Com & Industries Ltd, Mumbai-5
3. Yash Enterprises, Mumbai-19
4. Doriwala Industries, Surat – 395003
5. Doriwala Industries, Surat – 395003
6. Marwadi Brothers, Mumbai-3
7. MIs Rajmall Son's and Group, Salem-2
8. MIs Chunnilal Kundanmall, Salem-2
9. MIs Shanti Textiles, Salem-2
10. Mis Krishan's sale's Corporation, Bangalore-560002

(viii) None of the importers responded to the importers questionnaire. However, some importers and users association have responded to the initiation notification and they have submitted some comments, which have been taken into account subject to their being relevant to the investigation. Following importers, consumers and associations have responded to the initiation notification.

1. Handloom and Small Users Art Silk Yarn Association Ltd.
2. Federation of Indian Art Silk Weaving Industry (FIASWI), Surat.
3. Pandesara Ind Co Operative Society Ltd, Surat.
4. Bhiwandi Textile Manufacturer's Association Ltd,
5. The Udhna Group Weavers Producers Coop Society Ltd.
6. Surat Rayon Textiles Exporters Cooperative Society Ltd, Surat.
7. Sasme Cooperative Society Ltd.
8. Surat Vankar Sahakari Sangh Ltd, Surat.
9. Surat Art Silk Cloth Producers Cooperative Society Ltd, Surat.

However, none of the importers have submitted information as required under importers questionnaire and thus have not cooperated with the Authority in these investigations.

(ix) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

(x) **** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

(xi) The investigation of dumping and injury covered the period from 1st January 2004 to 31st December 2004 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from POI and three years prior to that.

(xii) The public hearing was held on 2nd November 2005 under the auspices of Designated Authority wherein all the interested parties were invited to submit their views before the Authority. They were also asked to submit their written comments of the arguments advanced by them during the public hearing and they were also asked to submit rejoinders based on the written submissions of the other interested parties. It is pertinent to note that because of the divergence of the data especially the export values of the subject goods of the exporters and data recorded by DGCIS of these imports made by Indian importers, all the major importers whose names appeared in the DGCIS data were requested to submit imports made by them in the form and manner

required by the importers questionnaire stating that information submitted by them would greatly facilitate the investigations. However, none of the importers whom the Authority asked submitted any information and thus the importers did not cooperate with the Authority in this investigation.

(xiii) The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of final determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The Authority also conducted the exporters verification visit during February 2006 to verify the information submitted by the exporters. A verification report (confidential) was issued to the exporters while a non-confidential copy of the verification report was kept in the public file for the benefit of all other interested parties. Meanwhile, the cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the best cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry. A disclosure statement was issued on 17th March and comments made by various interested parties have been analysed to the extent, which has been considered relevant in this investigations. It is noted that subsequent to the disclosure statement, comments have been received from various interested parties including responding exporters, Ministry of Commerce of China PR, China Chamber of commerce for import and export (CCCT), the domestic industry and M/s Federation of Indian Art Silk Weaving Industry (FIASWI), Mumbai.

B. Product under Consideration.

2. The product under consideration in the present investigation as mentioned in the initiation notification is Viscose Rayon Filament Yarn up to 150 deniers (and \pm 4% permissible variation thereof), other than sewing thread, including mono filament yarn of less than 67 decitex also known as viscose filament yarn or VFY, Rayon Filament Yarn, Art Silk Yarn, Cellulose Yarn or Rayon Yarn and includes all yarns made of 100% viscose yarns such as dyed yarn, flat yarn, microfilament microyarn, twisted yarn, doubled/ multiple ply yarn etc of VFY.

3. Subsequent to the initiation, Federation of art silk Weaving Industry (M/s FIASWI) an association comprising of the consumers of the subject goods and other importers have represented that the technology, various parameters defining the product and tariff heads have been applied to define a PCN (Product Control

Nomenclature) which is suited to the domestic industry. They also asked the authority to clarify the tariff heads, which the subject goods pertain to and have suggested that the product scope should be clarified to all interested parties. They have also requested the Authority to exclude various types of the subject goods from the purview of the product under consideration, which are not manufactured by the domestic industry.

4. The Authority notes that Viscose rayon filament yarn is a regenerated cellulosic yarn which is produced from natural renewable resources i.e. wood pulp. Different types of VFY are produced from the similar production technology, manufacturing process, raw materials, plant & equipment and perform the same general purpose. Even though the product has been grouped into types according to technology (CSY/PSY), denier, luster, color, twisting, doubling, these different types contain the same basic characteristic of VFY as there is a great amount of substitutability between different types of VFY. The subject goods are classified within Customs subhead 54033100, 54033200, 54033300, 54034110, 54034120, 54034130, 54034140, 54034150, 54034160, 54034170, 54034180, and 54034190 though they have been reported to have been imported within other chapter heads also (like chapter 55). In this respect, the Authority holds that investigations have been initiated with respect to product under consideration irrespective of the classification under which they are being imported. Customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of these investigations.

5. With regards to the arguments advanced by some of the interested parties with regards to the scope of the product under consideration, it is held that this product includes all variants of VFY unless specifically excluded, such as twisted/untwisted/flat, bright/dull (or variants thereof), coloured/dyed (or variants thereof), multiple/folded/cabled (or variants thereof), whether or not sized yarn of viscose, but *excludes* high tenacity yarn of viscose classifiable under customs sub-heading 5403.10 (having tenacity beyond 2.2 gpd), textured yarn of viscose classifiable under 5403.20, viscose rayon tow classifiable under customs sub-heading 5502, all artificial yarns not having viscose filaments or having a combination of viscose filaments and other filaments. During the investigation, the opposing interested parties have sought exclusion of fur yarn, fire retardant yarn, air texturised yarn and embroidered yarn from the scope of the investigations. After examining the records, the Authority notes that the data furnished by responding parties do not show imports of these types yarn except embroidered yarn. With regards to the claim of some of the

interested parties to exclude the inclusion of embroidered viscose filament yarn from the purview of subject goods, it is noted that since embroidered yarn has been imported from the subject countries and no like article has not been offered by the domestic industry during the injury period, it is considered appropriate to exclude embroidered yarn from the purview of product under consideration. On the basis of detailed examination, it is considered more appropriate to exclude these types of yarn from the scope of the product under consideration.

6. Some of the importers and consumers have pointed out that use of the technology should differentiate the product as the imported subject goods are largely made of Tube spinning technology as against conventional trough spinning technology employed by the domestic industry. It has also been added that product should be differentiated on the basis of technology and raw material. It has also been brought before the Authority that prices differ on the basis of the denierage, twisting, dying, doping other value additions and therefore, the mandatory question of viability of substitute for the product needs to be addressed. The Authority has examined the contention of the interested parties and after examination, notes that various process of manufacturing i.e continuous spinning or pot spinning or choice of raw material such as wood pulp or cotton linters do not alter the basic physical, technical and chemical characteristics of subject goods. Moreover, subject goods within their specified denier as mentioned in the product under consideration are in many applications interchangeable and may have same or similar uses.

7. In view of the above, it is held that that the product under consideration in this investigation is Viscose Rayon Filament Yarn up to 150 deniers (and $\pm 4\%$ permissible variation thereof) including mono filament yarn of less than 67 decitex also known as viscose filament yarn or VFY, Rayon Filament Yarn, Art Silk Yarn, Cellulose Yarn or Rayon Yarn and includes all yarns made of 100% viscose yarns such as dyed yarn, flat yarn, microfilament microyarn, twisted yarn (with the exclusion of embroidered yarn), doubled/ multiple ply yarn etc of VFY unless specifically excluded in this paragraph (also referred to as subject goods herein after). However, the subject goods do not include sewing thread, fur yarn, fire retardant yarn, engineered yarn, embroidered yarn and air texturised yarn.

C. Like Article.

8. The applicants have claimed that goods produced by it are like articles to the goods originating in or exported from subject countries. There is no significant difference in the subject goods produced by the applicants and those exported from subject countries. With regards to the like article, the Authority notes that

rule 2 (d) relating to the definition of like article specifies that like article means an article that is 'identical' or 'alike' in all respects to the articles under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the article under investigation. In order to establish that subject goods produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from subject countries, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered by the Authority. Further, it has been submitted that the difference in the basic raw material in India and subject country leads to a marked cost difference and consequent prices and hence the subject goods manufactured from them may not be like product. The user industry has submitted arguments about the inability of the domestic industry to manufacture all the grades. The Authority has carefully examined these contentions after perusing the submissions made by various interested parties including the exporters and on-site verification of the sales data of the cooperating exporters from subject country. On the basis of the examination, it is noted that there is no significant difference within different deniers and different deniers of the subject goods in terms of their production facilities, physical and chemical characteristics and their broad usage. Further, no information along with any evidence has been presented to the Authority suggesting that domestic industry is not able to manufacture the particular grades "except those grades already excluded by the Authority from the product under consideration" and these grades are not substitutable amongst themselves. Moreover, it has been seen that the domestic industry largely produces the subject goods in 100, 120 and 150 denier with 120 deniers accounting for a major part of the production while imports have also been made for subject goods largely in 120 deniers (more than 80%). Further, it is also noted that every manufacturer fine-tunes its products to cover some narrow niche segments within a broad segment, but that does not render that product un-substitutable amongst themselves. On basis of the detailed investigation, the Authority notes that subject goods produced by domestic industry has characteristics, which are similar to those imported from subject countries and to those sold in the market of exporting countries. In view of the above the Authority holds that Viscose Filament yarn produced by the domestic industry and those being imported from and sold in the subject countries are like articles within the meaning of the rules.

D. Domestic Industry

9. The application has been filed by the Association of Man-Made Fibre Industry of India (AMFII) on behalf of M/s. NRC Ltd., Kesoram Industries Ltd. and M/s. Indian Rayon & Industries Limited (the applicants) who are producers of the like article and are

members of AMFII. The applicants have provided information relevant to the present investigations and have participated in the present investigations. The production of these companies constitute more than 50 % of Indian Production. M/s Century Rayon (A Division of Century Textiles & Industries Ltd.) and M/s Baroda Rayon Corporation Ltd. are other producers of the like article in India and have supported the present petition. The Authority has determined that (a) production of the three applicant companies constitute a major proportion in Indian production; (b) domestic producers expressly supporting the application account for more than 50 per cent of total production of the like product produced by the domestic industry; and (c) the application has been made by or on behalf of the domestic industry. The Authority after examining the above, determines that the applicants constitutes a domestic Industry within the meaning of the rule 2(b) read with 2(d) and it satisfies the criteria of standing to file the petition in terms of Rule 5(3) (a) of the Rules supra. The Authority notes that there are a number of small scale producers engaged in carrying out incremental activities on VFY sourced either from the Indian Producers or through imports. The Authority holds that regardless of whether or not production by these small scale producers carrying out incremental activities is included in Indian Production, application satisfies standing requirements under the Rules.

E. De-minimus.

10. As regards ascertaining that the imports from the subject countries during the period of investigation (POI) are above de-minimus levels, the Authority has referred to the transaction wise data from the subject countries as made available by DGCIS, Customs port and data made available by responding exporters. After examining the data, it is noted that the share of imports from Ukraine is below 3% of the total imports of the subject goods in India. There is no allegation or information with regard to potential volume of imports from Ukraine. The volume of actual or potential imports from Ukraine is thus negligible within the meaning of the Rules. Therefore, Ukraine has been excluded from the scope of the present investigations and accordingly, the Authority terminates investigations against Ukraine in accordance with Rule 14 of the Rules. The scope of the subject countries therefore gets redefined to China PR only in the remaining part of these findings. Henceforth, only China PR shall constitute as subject country in this investigation wherever referred.

F. Dumping.

11. Under Section 9A (1) I of the Customs Tariff Act 1975, Normal value in relation to an article means:

The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6)";

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). None of the exporters have responded to the initiation and questionnaire in any form and consequently; they have been treated as uncooperative in this investigation.

F (1) China PR

(a) Cooperation

12. Four Chinese producers/exporters have made themselves known during the process of investigation and they have responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to Questionnaire pertaining to market economy status and also various appendices mentioned in the exporters' questionnaire.

(b) Normal Value & Export Price:

(M/s Xinxiang Chemical Fiber Co., Ltd (Xinxiang), M/s Yibin Grace Co. Ltd (Grace), Yibin Heist Fibre Co. Ltd (Heist), and M/s HMEI Thread Co. Ltd, (HMEI). China PR

13. The Authority has examined the submissions of the cooperating exporter, M/s Xinxiang, based on its responses to the market economy questionnaire and also with regard to various appendices of the exporter's questionnaire. After examining the responses, the Authority notes that M/s. Xinxiang Bailu Chemical Fibre Group Co.

Ltd. ("Group Company"), which is a promoter of the company and is fully state owned company owns ****% shareholding in the subject company. However, it was submitted during the verification that the state is merely a shareholder and there is no interference by the State with the daily functioning of the companies or the commercial and pricing decisions. With regard to the invoices and the contract of purchase of raw materials, it was contended by the company officials that there is no preferential sourcing of raw materials, intermediates and dyes along with the packaging material from other state owned enterprises or other companies. During the process of verification, the verification team collected some invoices and contracts for purchase of raw materials which pertain to purchase of cotton pulp, cotton linter, caustic soda, sulphuric acid, zinc sulphate, carbon bisulphide and coal. The prices at which the raw materials are purchased from the group company or state owned company are shown higher or at the same level at which they are purchased from private companies. However it was noted that out of a total share capital of RMB ****, ****% shares amounting to RMB **** were unlisted and owned by the State. This was further seen that this percentage holding remained unlisted and without any market movement. With regards to boards of directors in the company, it was seen that a majority of the directors is appointed out by M/s. Xinxiang Bailu Chemical Fibre Group Company and the independent Directors are in minority. The Chairman of the Company who is also a Director of the Company is appointed by M/s. Xinxiang Bailu Chemical Fibre Group Company, which is a state owned company.

14. With regards to the export price, It is recalled that exports transaction to India was showing different unit values in the DGCIS data and the exporter's data when these transactions were compared importers wise and date and volume wise. However, it was found that part of the payments was made as TT payments and the balance payment was received in the D/P basis. The exporters pointed out that the reason why they chose this payment method was the fact that this gave them cushion against bad debts and given the fact that importers sometimes default on the payments after receiving the goods. For each transaction, the exporter was informed by the Indian importer when the T/T payments were made. Only when the part payments made by T/T were received, the subject company would arrange to ship the subject products. In the case of Xinxiang, it was found that the exporter has realized the payment partially from the TT payment and partially from the DP payment. However, when asked by the verification team about linking up various TT payments against the invoices mentioned and against the importer mentioned in the shipping documents, it was submitted that it would be difficult for them to segregate the TT realizations with regard to various importers by name. However, the exporter submitted the documents to the verification team which illustrated the fact that the

exporter has realized the entire money which was invoiced on the importer from the TT and the DP Payment basis. It was also shown to the satisfaction of the verification team that the shipping bill documents had clearly mentioned the numbers of TT payment along with the full amount of the invoice. It was also explained to the verification team along with the evidence that the exporter had received the VAT refund on the basis of the full amount realized by them as mentioned in the invoice. After verifying the records, it was found that though their sales quantity matched with many transactions in the DGCI&S report, their values did not fully match the values reflected in the DGCI&S report. On being asked about the discrepancy in the DGCI&S data (based on the imports made into India) and exporters data reflected in their invoice and shipping bills and proof of their subject goods imported into India by Indian importers at the same price as reflected in their invoice, the exporter could not fully establish the fact that they have received the payments from the same importer for entire invoice amounts and their Indian importer has actually imported the subject goods at the price invoiced by the exporter. In view of the above fact, it is proposed to take the export price as per the information submitted by the exporter and as verified by the Authority. However, in those transactions, wherever, the invoice and sales of the subject goods to India could not be reconciled by the port data, the export price accepted by the Authority was modified to the extent and as per the price at which the subject goods were imported into India by importers. The Authority has accepted all the adjustments claimed by the exporter to arrive at the net export price.

15. Similarly, with regards to the responses filed by M/s Yibin Grace Co Ltd (Grace) and M/s Yibin Heist Co Ltd, (Heist) , It was submitted that both the companies are State-Owned Enterprises (SOEs). However, it was claimed that the state is merely a shareholder and there is no interference by the State with the daily functioning of the companies or the commercial and pricing decisions. The Companies under investigation are M/s. Yibin Grace Company and Heist Fibre Co. Ltd. It was mentioned that in the questionnaire response, M/s. Yibin Grace Group Company has ****% share holding in Yibin Grace Company Ltd. and ****% share holding in Heist Fibre Co. Ltd. As it was stated that Yibin Grace Group Company is state owned, efforts were made to understand Capital Structure composition of Yibin Grace Group Co.

16. The Capital structure of M/s. YIBIN GRACE GROUP Company was analysed. It was stated by the Company and their Lawyer that M/s Yibin Grace Group Limited Corporation is another name for this Company. The registered capital of this Company is RMB **** Million. It was seen that Yibin Grace Group Company has investment of ****% in Yibin Grace Co. Ltd. The Registered Capital of Yibin Grace Co. Ltd is RMB **** Million. This company

has ****% holding in Heist Fibre Co. Ltd. It was seen that the Chairman Mr. Feng Tao is common for both these companies. The Company was asked to explain as to how Yibin Grace Group Co. came into existence. It was explained by the Company that initially in 1988 Sichuan Province Yibin Chemical Fibre Plant (fully owned by the State) was established to produce the VFY. In the year 1999, the assets of this plant were appraised by Yibin Appraisal Office vide their Report No. **** of ****. A few documents pertaining to the some raw materials, and utilities were provided to show that the raw materials are procured by Grace and Heist from the Grace Group or other SoEs at market driven prices. The Export Data of GRACE was tallied from several records of the company. One sample transaction was taken and the following documents were tallied (****, Invoice no ****). It is recalled that this transaction was showing different unit values in the DGCIS data and the exporters data when these transactions were compared importers wise and date and volume wise. However, it was found that part of the payments were made as TT payments and the balance payment was received in the D/P basis. The exporters pointed out that the reason why they chose this payment method was the fact that this gave them cushion against bad debts and given the fact that importers sometimes default on the payments after receiving the goods. In the case of Grace, it was found that the same importer had sent the money by the TT basis to the exporter during the same time when the subject goods were shipped to the importer (only one transaction with the importer with the TT payment). However, M/s Heist admitted during the verification that they cannot submit the evidence of the full payments collected from the same importer as it was seen that part of the payments were on T-T basis for which exporters could not establish the facts that their subject goods were indeed imported by same importers at the same price at which these subject goods were invoiced. In view of the above fact, it is proposed to take the export price as per the information submitted by the exporter and as verified by the Authority. However, in those transactions, wherever, the invoice and sales of the subject goods to India could not be reconciled by the port data, the export price accepted by the Authority was modified to the extent and as per the price at which the subject goods were imported into India by importers. The Authority has accepted all the adjustments claimed by the exporter to arrive at the net export price.

17. It is noted that the cooperating exporters (M/s Grace and M/s Heist) have significant state share holding. Again, it is noted that no substantive evidences have been submitted in their responses along with the relevant facts with which they want to rebut the presumptions as mentioned in para 8 of annexure 1 of the Anti dumping rules and Market Economy Questionnaire sent to them with regards to grant of market economy status to their company.

Further to the para 8 of the Annexure 1 of the Anti dumping rules, a MET claim must contain sufficient evidence that the exporting producer operates under market economy conditions. In particular, the exporting producer must evidence that its decisions regarding prices, costs, and inputs, costs of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand, and without significant state interference in this regard. Therefore, in cases, where companies are predominantly or entirely state owned with all consequences of the decision making process and nomination of key positions such as directors or managers etc., the aim of the investigation is also to assess to what extent the state could interfere in case anti dumping measures are imposed and what measures were taken by the company to prevent such interference. In these particular cases, it was considered that the companies that the companies which were predominantly state owned failed to demonstrate that appropriate measures have been taken to prevent state interference and that the state did not interfere in their business decisions. Under these circumstances, it is proposed to assume that there was a significant state interference in the business decisions of the predominantly state owned companies.

18. With regards to the submissions made by M/s HMIE, it is noted that the cooperating exporter is undertaking only the value added production activity and not complete production of subject goods. Further, it has been mentioned in their response that the subject company does not manufacture the subject goods though it has submitted the various appendices pertaining to the exporter's questionnaire. It is further noted from their response that they have purchased viscose rayon from the producers namely M/s Grace and M/s HEIST which have separately responded in the investigation and which have significant state share holding. The company informed that their product is viscose rayon embroidered thread and this product should not be taken within the purview of product under consideration. They also added that their product is produced by the process of reeling, twisting, hanking or core winding, finished product quality checking and grading and packing. It was also added and illustrated by their factory visit that their dyed viscose rayon embroidered thread is produced by taking raw white viscose rayon embroidered thread as its raw materials. Further, it is produced by process of dyeing, drying, semi-finished quality checking, reeling, cone winding, grading and packing. It was also illustrated to the verification team after the tour of their factory premises that rayon embroidery thread is downstream deep process products of viscose filament yarn and its HS Code is also different from normal viscose filament yarn. The HS Code of the embroidery thread is 4503.4100. It was also submitted during the verification that viscose rayon embroidery thread is mainly used in embroidering and cannot substitute viscose filament yarn in

weaving operation. It was also contended during the process of verification that the prices of their product i.e. embroidered thread are usually higher by 50% from the prices of the viscose filament yarn on account of significant value addition made through the process of dying, drawing, reeling, cone winding, twisting, grading and packing. In view of this response, it is considered that no subject goods have been exported to India by the responding exporter and hence no individual dumping margin could be determined for the responding exporter.

19. With regards to the M/s Yibin Grace, M/s Yibin Heist and M/s XinXiang, it is noted that the responding exporters are substantially State owned. Further, the Designated Authority while requesting information in the form and manner desired advised the Chinese producers to rebut the presumption that these companies are treated as Non market economy companies. The companies were required to provide information and evidence while rebutting such presumption. The Authority notes that It is insufficient to respond to the questionnaire in this regard, as the purpose of the questionnaire is only to seek certain specific information. The obligation to establish that these companies satisfy market economy status is also onto these exporting companies. In fact, these companies are required to establish that they are free from State interference and satisfy the parameters laid down under the Rules. In these particular cases, it was considered that the companies that the companies which were predominantly state owned failed to demonstrate that appropriate measures have been taken to prevent state interference and that the state did not interfere in their business decisions. Under these circumstances, it is proposed to assume that there was a significant state interference in the business decisions of the predominantly state owned companies. Subsequent to the disclosure, it has been pointed out that Chairman in the company has not been appointed by the holding company (which is a State owned company). It is clarified in this connection that the selection of directors and thereafter Chairman of the board of directors is done by shareholders, where the State owned companies are in majority. It cannot therefore be claimed that the State owned companies had no influence over appointment of directors and thereafter Chairman in the board of directors. In view of the above fact, the Authority has constructed the normal value on the basis of para 7 of the Annexure 1 of the Anti dumping rules

20. Subsequent to the disclosure statement, a number of interested parties have argued that the Authority is not justified in considering India as a surrogate country. It has further been added that the Authority has not disclosed the methodology for determination of normal value. It has been further argued that the production process is different in India and China and therefore cost of production in India cannot be accepted. After having examined the

submissions of all the interested parties, it is noted, as stated in the disclosure statement and in this findings, that even as when various interested parties opposed choice of India as an appropriate surrogate country, none of the interested parties provided information with regard to an appropriate third country relevant to determination of normal value. Even though CCCT suggested considering Brazil as a surrogate country, it is noted that no relevant information was provided with regard to Brazil, which would have permitted consideration of Brazil as an appropriate third country. Under the circumstances, the Authority considers that the only appropriate option with the Authority is to determine normal value in China on the basis of estimates of cost of production in India. With regard to difference in raw materials, the Authority notes that it would not be appropriate to hold that the costs on account of raw materials could be different because of difference in the starting raw material by merely considering such difference on the basis of Indian costs and Chinese costs. This can only be established by considering such differences on the basis of costs in India and costs in third countries. No such claim has however been made. Therefore, the Authority is unable to make any possible adjustment from the normal value on this account.

21. The Authority notes that applicants had not provided an evidence of price or constructed value in a market economy third country. Price from a market economy third country to other countries was also not made available by the applicants despite the fact that the Authority did write to the known exporters from the EU to submit the relevant information. It may be noted that Prices from market economy third country to India could also not be adopted for the reasons that (a) the product under consideration involved a number of different types depending upon the deniers, colour and lustre which vary in associated costs & prices; (b) price adjustments to determine ex-factory prices are not available. While disputing the claim of the domestic industry to treat Chinese producers as non market economy, the Chinese producers, or importers or any other interested party made no claim nor advanced any evidence either with regard to price or constructed value in a market economy third country. Under the circumstances, the Authority has determined that only option available for the purpose of final findings is to determine normal value considering price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted, to include a reasonable profit margin. Price actually paid in India has not been considered for the reason that the same has been suppressed. Thus, the Authority has constructed the normal value by taking into account cost of production in India, duly adjusted, to reflect international raw material prices and optimum conversion costs, selling, general & administrative expenses and reasonable profit.

(c) Comparison

22. For the purpose of a fair comparison between the normal value (constructed normal value) and export price at an ex factory level, due allowance in the form of adjustments was made for differences which affect prices and price comparability subject to their being verified after the provisional determination.

(d) Dumping Margin:

23. The Authority has worked out a Dumping margin for each of the different grades/types depending upon their specifications like lustre, denier and brightness of the subject goods by making a comparison between the normal values and export price of the different types at ex factory level. This comparison was based on the weighted average selling price of each type of the subject goods manufactured by the producers/exporters and exported to India during the POI for which a comparable type of the subject goods could be found. Thus, weighted average overall dumping margin was determined by computing the dumping found on each type without zeroing negative dumping found on individual types. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporters during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined.

| Country | Name of the Producer/exporter | DM (US\$/Kg) | D.M% |
|----------|------------------------------------|-----------------|-------|
| China PR | M/s Yibin Grace Co Ltd | **** | 25.65 |
| | M/s Yibin Heist Co Ltd | **** | 32.82 |
| | M/s XinXiang Chemical fibre Co Ltd | **** | 24.30 |
| | Others | **** | 74 |

24. Subsequent to the disclosure statement, it has been submitted by various interested parties that provisional findings has not been issued in this investigation, which is quite different from the normal practice. With regards to this argument, it is stated that the information provided by the petitioners, Foreign Producers, transaction wise imports information provided by the DGCI&S and Customs Port Authorities showed significant differences with regard

to the volume and price at which imports have been reported. In view of significant variations in the claims with regard to volume and prices, which have direct impact on the determination, it was considered appropriate not to issue preliminary findings. Further, it has been argued that the Authority should have accepted the data of CCCT and rejected the DGCIS information. In this regard, it is stated that the information provided by the DGCIS was not considered useful for the reason that full volume of imports of the subject goods was not reflected in this information. However, the information could not have been discarded for the purpose of determination of the price at which goods have been reported. It is further noted that the prices reported by the Customs Port Authorities and DGCIS are quite relevant and appropriate for the purpose of determination of the price at which goods have been imported. Further, since DGCIS information does not give information with regard to foreign Producers, the same could not be fully used. However, to the extent the information could be used, the same has been used in the present investigations. Further, it has been argued that the cost of production of subject goods is different depending upon whether the goods produced are through pot spun or continuous spun technology and the authority should have taken into account while determining the dumping margin. The Authority notes that the difference in the costs on account of this difference in production processes have been duly recognized by the Authority and separate normal values have been determined for CSY and PSY. Further, the export prices have also been considered separately for CSY and PSY. Thereafter, one weighted average dumping margin has been determined for the subject goods.

G. Injury

Domestic Consumption/Demand

25. The petitioner claimed in the petition the volume of imports from China as under:

| Year | Volume in MT | Value (Rs.Lacs) | Rate per KG |
|---------|--------------|-----------------|-------------|
| 2001-02 | 1933 | 2018 | 104.42 |
| 2002-03 | 6580 | 7899 | 120.05 |
| 2003-04 | 4842 | 5660 | 116.89 |
| POI | 3626 | 4483 | 123.64 |

The response received from the four Chinese producers reveals volume of imports as under:

| Year | Exporter | Volume in MT | Value in Million US\$ | Rate per KG in INR |
|------|----------|--------------|-----------------------|--------------------|
| 2002 | Grace | **** | **** | **** |
| | HMEI | **** | **** | **** |
| | Hiest | **** | **** | **** |
| | XinXiang | **** | **** | **** |
| 2003 | Grace | **** | **** | **** |
| | HMEI | **** | **** | **** |
| | Hiest | **** | **** | **** |
| | XinXiang | **** | **** | **** |
| 2004 | Grace | **** | **** | **** |
| | HMEI | **** | **** | **** |
| | Hiest | **** | **** | **** |
| | XinXiang | **** | **** | **** |
| | Total | **** | **** | **** |

The Authority collected information from DGCI&S as also from various customs houses including JNPT, Mumbai Customs and Chennai Customs. The information provided reveals volume of imports for the POI as under:

Volume in MT

| Source | Volume in MT | Value in Rs. Lacs | Rate per KG in INR |
|------------------|--------------|-------------------|--------------------|
| DGCI&S | 4626 | 5656.06 | 122.27 |
| JNPT, Mumbai | | | |
| ➤ Xinxang | | | |
| ➤ Yibin Heist | | | |
| ➤ Yibin Grace | | | |
| Total at JNPT | 2810 | 3961.64 | 140.97 |
| Chennai Port | | | |
| ➤ Xinxang | | | |
| ➤ Yibin Heist | | | |
| ➤ Yibin Grace | | | |
| Total at Chennai | 538 | 636.16 | 118.19 |

During the course of on the spot investigation, discussions were held with CCCT. CCCT confirmed the volume of exports to India in the investigation period as follows:

| Year | Volume in MT | Value in Million US\$ | Rate per KG in INR |
|------|--------------|-----------------------|--------------------|
| 2002 | 6730 | 20.61 | 149.26 |
| 2003 | 7040 | 22.65 | 150.96 |
| 2004 | 5580 | 16.90 | 138.20 |

26. It would be seen that different sources revealed different volume of imports. The Authority received transaction wise details of imports from the responding exporter, IBIS, DGC&S, various customs ports including JNPT Mumbai port and Chennai port. The information provided included inter-alia name of the exporter (except IBIS and DGCI&S information), name of the importer, quantity, value of the goods, date of import etc. It was thus feasible for the Authority to correlate various information on shipment by shipment basis. Investigation revealed a number of instances where even though the volumes reconciled, the associated values differed significantly. At the same time, investigation has revealed that a large number of import transactions reported by the responding exporters are not reported in the data/ information provided by secondary sources, JNPT Mumbai, Chennai port and DGCI&S. It is also found, as stated in the para on the dumping margin, that the value of imports reported by the Customs in respect of a large number of entries are significantly different than value of exports reported by the exporter, even when the value reported by the Customs is based on the value of the invoice raised by the very same exporter. It has not been established by the exporters that goods invoiced by them on importer could have been cleared by some other party. In fact, there is not even a quantified claim to this effect. Under the circumstances, it is considered that it would be appropriate to determine volume of import by considering all individual import transactions reported by the responding exporters, and data received from various ports including Chennai port and JNPT Customs which are not reflected in exporter's response for the POI. For previous years, the import data has been taken as per the DGCI&S transaction wise information.

Considering the foregoing, the Authority has considered the volume of import as follows:

| Year | Volume in MT |
|---------|--------------|
| 2001-02 | 1978 |
| 2002-03 | 6034 |
| 2003-04 | 6069 |
| POI | 5580* |

*Data also closely matches with the CCCT data

27. For the calculation of the domestic consumption/demand of the product under consideration, the Authority has added the sales volume of the domestic industry to the total imports as determined in the preceding paragraphs into India.

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec,04 |
|----------------------------------|------|---------|---------|---------|---------------|
| Imports from China | MT | 1978 | 6034 | 6069 | 5580 |
| Imports From Other Countries | MT | 993 | 2284 | 672 | 673 |
| Petitioners | MT | 18146 | 18658 | 19430 | 21689 |
| Other supporting Indian Industry | MT | 11507 | 10382 | 9134 | 11519 |
| Total Demand | MT | 32624 | 37358 | 35305 | 39460 |

On the basis of the demand analysis, it is considered that the demand of the subject goods has shown an increasing trend during the injury period. In fact, the demand has increased by 21% during the injury period though most of the increase has come though during the POI.

Imports originating in the subject country and other countries

Volume of imports

28. The volume of dumped imports of the product under consideration from China PR, and as also from other countries is placed in the table below:

| | UNIT | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec,04 |
|---------------------------|------|---------|---------|---------|---------------|
| Imports – China | MT | 1978 | 6034 | 6069 | 5580 |
| Indexed | | 100.00 | 305.00 | 306.77 | 282.08 |
| Year by year change | % | | 205.00 | 0.58 | -8.05 |
| Imports – Other Countries | MT | 993 | 2284 | 672 | 673 |
| Indexed | | 100.00 | 229.99 | 67.63 | 67.76 |
| Year by year change | % | 0.00 | 129.99 | -70.59 | -0.19 |
| Total Imports | MT | 2971 | 8318 | 6740 | 6253 |
| Indexed | | 100 | 280 | 227 | 210 |
| Demand | MT | 32624 | 37358 | 35305 | 39460 |
| Indexed | | 100 | 115 | 108 | 121 |
| Year by year change | % | 0.00 | -9.78 | -12.02 | 26.10 |

On the basis of the imports data, it is noted that imports of the subject goods from subject country have increased in absolute terms.

Share of subject country in total imports:

29. Between 2001-02 and the POI, it is noted that the share of dumped imports from subject countries increased and was substantial.

| Market Share in Imports | UNIT | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|-------------------------|------|---------|---------|---------|----------------|
| China | % | 66.57 | 72.54 | 90.03 | 89.24 |
| Other Countries | % | 33.43 | 27.46 | 9.97 | 10.76 |

It is noted that imports of subject goods from the subject countries significantly increased over the years, resulting in significant increase in share of subject imports in relation to total imports of the subject goods into India. At the same time, share of other countries in imports into India declined significantly.

| Market Share in Imports | UNIT | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|---|------|---------|---------|---------|----------------|
| China | % | 66.57 | 72.54 | 90.03 | 89.24 |
| Other Countries | % | 33.43 | 27.46 | 9.97 | 10.76 |
| Year by year change | % | | 16 | -8 | 21 |
| Year by year change | % | | 21 | -11 | 17 |
| Production | MT | 17793 | 21038 | 21907 | 21465 |
| Share of China as a proportion to domestic production | % | 11.12 | 28.68 | 27.70 | 26.00 |
| Demand | MT | 32624 | 37358 | 35305 | 39460 |
| Share of China as a proportion to consumption | % | 6.06 | 16.15 | 17.19 | 14.14 |

From the above, it is considered that imports from subject country have increased significantly and it has significantly increased in relation to production of like products of the domestic industry.

Market share of dumped imports in total demand

30. The Authority has examined the share of dumped imports from the subject country in consumption in India. The Authority finds that share of subject country, which was 6.06% in 2001-02 increased to 14.14% of the demand during the POI. On the other hand, Market share of imports from countries other than subject country declined from 3.04% to 1.71% during the same period.

| Market share in Demand | UNIT | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|--|------|---------|---------|---------|----------------|
| Domestic industry | % | 55.62 | 49.94 | 55.04 | 54.96 |
| Other Supporting Companies | % | 35.27 | 27.79 | 25.87 | 29.19 |
| Indian Industry | % | 90.89 | 77.73 | 80.91 | 84.15 |
| China | % | 6.06 | 16.15 | 17.19 | 14.14 |
| Other Countries | % | 3.04 | 6.11 | 1.90 | 1.71 |
| Changes in market share – from base year | | | | | |
| Domestic industry | % | | -5.68 | -0.59 | -0.66 |
| Other Supporting Companies | % | | -7.48 | -9.40 | -6.08 |
| China | % | | 10.09 | 11.13 | 8.08 |
| Other Countries | % | | 3.07 | -1.14 | -1.34 |

It is seen from the above that share of subject imports increased significantly. It would also be seen that the domestic industry has not lost any significant market share over the years and during the POI. However, the share of Indian industry in the total demand has gone down by 7 percentage points during the same time. Imports share from countries other than subject country have declined and are considered negligible.

Price Undercutting

31. A comparison for selling price of domestic industry and landed price of imported material from subject country was made. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. To determine landed price of imports from China PR, the Authority has added applicable basic customs duties and other charges to the CIF value. Comparison of landed price of entire imports from subject country and selling price of domestic industry showed that landed price of subject goods undercut the domestic selling prices during POI though margin of price undercutting is not very significant. However, margin of price undercutting does not give the true picture of the state of domestic industry as domestic industries prices were already depressed. The price undercutting has also been worked out separately for the responding exporters which show positive price undercutting except one exporter whose volume of exports is very less (less than 5%). It is pertinent to note that examination of exports data from China PR show that their exports prices differ a wide range with regards to

quantity and price and difficulty has been further compounded by total non cooperation by all importers in this investigation who have chosen not to cooperate and submit the data to the Authority. Further, the exporter's volume and prices do not match with the data correlated with the ports and DGCIS and in many instances, the volumes and prices reported by the exporters appear to be understated. A copy of the data received from all the responding exporters (without the importers name, date and invoice numbers) and those made available by ports and DGCIS have been kept in the public file for information to all the interested parties. The price undercutting margin for different scenarios based on the data received is mentioned below. It is further added that the Authority has determined the margin of price undercutting in terms of various grades, deniers and other parameters after fully analysing the verified data of the exporters, and the domestic industry.

Price Undercutting for China as a whole for various grades and product as a whole during POI for volumes based data made available by DGCIS, Customs port data, JNPT and Chennai Customs and exporters response

Price undercutting from China as per the data received from DGCIS

| Particulars | Unit | Jan to Dec, 04 |
|------------------------------------|---------|----------------|
| Imports-Quantity | | |
| China | MT | 4625 |
| Other Countries | MT | 673 |
| Imports-Value | | |
| China | Rs.Lacs | 5656 |
| Other Countries | Rs.Lacs | 911.88 |
| Export Price | | |
| China | Rs./KG | 122 |
| Other Countries | Rs./KG | 135.48 |
| Landed Value | | |
| China | Rs./KG | 148 |
| Other Countries | Rs./KG | 164.21 |
| Net Sales Realisation | Rs./KG | **** |
| Undercutting | | |
| China | Rs./KG | **** |
| Other Countries | Rs./KG | 2.84 |
| Price Undercutting % from China PR | | 10-15% |

Price Undercutting and Price Underselling taken into account by the Authority as per the volumes (total volume considering the exports made by the responding exporters and information of the Customs of the other exporters as per various port data) and price (as per exporters data revised for the discrepancy with the port data as mentioned earlier)

| Exporter | Dnr. | CSY/PSY | Volume | CIF Price | Landed | NSR | Undercutting | Undercutting % |
|-------------------------|--------------|------------|-------------|-----------|--------|------|--------------|----------------|
| Xinxiang | 120 | CSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** |
| | 100 | CSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** |
| | 100 | PSY | **** | **** | **** | **** | (****) | (****) |
| Xinxiang | Total | | **** | **** | **** | **** | **** | 1-2% |
| | | | | | | | | |
| Yibin Grace | 120 | PSY | **** | **** | **** | **** | (****) | (0-1)% |
| | | | | | | | | |
| Yibin Heist | 100 | PSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** |
| | 120 | PSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** |
| | 150 | PSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** |
| Yibin Heist | Total | | **** | **** | **** | **** | **** | 5-6% |
| | | | | | | | | |
| Others all types | | CSY | 129 | **** | **** | **** | **** | 20-30% |
| | | PSY | 1222 | **** | **** | **** | **** | 20-30% |

Price Underselling

| Exporter | Dnr. | CSY/PSY | Volume | CIF Price | Landed | NSR | NIP | IM | Price Underselling | Price Underselling |
|-------------------------|--------------|------------|--------|-----------|--------|------|------|------|--------------------|--------------------|
| Xinxiang | 120 | CSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | |
| | 100 | CSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | |
| | 100 | PSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | |
| Xinxiang | Total | | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | 15-20% |
| | | | | | | | | | | |
| Yibin Grace | 120 | PSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | 5-10% |
| | | | | | | | | | | |
| Yibin Heist | 100 | PSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | |
| | 120 | PSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | |
| | 150 | PSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | |
| Yibin | Total | | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | 10-15% |
| | | | | | | | | | | |
| Others all types | | CSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | 25-30% |
| | | PSY | **** | **** | **** | **** | **** | **** | **** | |

Table showing the dumping margin (DM)% and injury margin (IM)%

| Exporter | DM% | IM% |
|-------------|-------|--------|
| Xinxiang | 24.30 | 12-18% |
| | | |
| Yibin Grace | 25.65 | 5-10% |
| Yibin Heist | 32.82 | 8-15% |
| | | |
| Others | 74% | 25-40% |

32. The Authority received transaction wise details of imports from the responding exporters, IBIS, DGC&S, JNPT Mumbai port and Chennai port. The information provided included inter-alia name of the exporter (except IBIS and DGC&S information), name of the importer, quantity, value of the goods, date of import etc. It was thus feasible for the Authority to correlate various information on shipment by shipment basis. Investigation revealed a number of instances where even though the volumes reconciled, the associated values differed significantly. At the same time, investigation has revealed that a large number of import transactions reported by the responding exporters are not reported in the data/ information provided by secondary sources, various ports including JNPT Mumbai, Chennai port and DGC&S. It is also found, as stated in the para on the export price, that the value of imports reported by the Customs in respect of a large number of entries are significantly different than value of exports reported by the exporter, even when the value reported by the Customs is based on the value of the invoice raised by the very same exporter.

Price Depression

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|-----------------------|--------|---------|---------|---------|----------------|
| Net Sales Realization | Rs./KG | **** | **** | **** | **** |
| Indexed | | 100 | 124 | 113 | 102 |

33. From the above data, it is noted that selling prices of the domestic industry has been showing a continuous decline after they went up in 2002-03 from the base year. The prices of the domestic industry have drastically reduced during the POI as compared to previous year.

Situation of the Domestic Industry

34. The application was filed by three companies by AMFI on behalf of M/s Kesoram Rayon, M/s Indian Rayon and M/s NRC. It is noted that M/s Century Rayon, Mumbai supported the application at the time of initiation. The Authority called for the information relevant to injury and injury margin from M/s Century Rayon upon initiation of investigations. The Company has provided some information, which is not complete for being included for detailed examination of injury. In view of the above, the Authority considers M/s Kesoram Rayon, M/s NRC and M/s Indian Rayon as the domestic industry for the purpose of injury to the domestic industry in these findings.

Annexure II (iv) to the Rules states as under:-

- (iv) *the effect of the dumped imports shall be assessed in relation to the domestic production of the like article when available data permit the separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers sales and profits. If such separate identification of that production is not possible, the effects of the dumped imports shall be assessed by the examination of the production of the narrowest group or range of products, which includes the like product, for which the necessary information can be provided.*

35. The Authority notes that injury information has been verified in respect of like article to the extent feasible and separately available. However, in those situations where the information is not separately available in respect of the like article (for instance, capacity and capacity utilisation), because separate identification of that information is not feasible, the Authority has examined information in respect of narrowest group/range of products, which includes the like article (i.e., all kinds of Viscose Filament Yarn, including both below and above 150 deniers) and for which the necessary information was available.

36. Further, the applicants have argued that comparison should not be made with reference to 2001-02 for a number of reasons, inter-alia, because the industry was suffering from Chinese dumping in that period, strike in major textile markets by the consumers and massive earthquake in Gujarat. Practice of the European Commission has also been cited in support of its claim for exclusion of 2001-02. On the other hand there are arguments that domestic industry does not show significant injury when its performance is seen with regards to the base year. The Authority has examined the contention of various interested parties and after, examining, it confirms that it has been the consistent practice of the Authority to compare performance of the domestic industry over a period of four years, including dumping period and therefore it would not be appropriate to exclude the year 2001-02. Further, it is further clarified that the performance of the domestic industry during the POI is measured against the trends of the various parameters during the injury period which comprises of POI and earlier 3 years. So it is the trend of the various indicators which is important rather than the performance of the domestic industry only during the POI and base year. In this investigation, while analyzing the performance of the domestic industry, the Authority has taken note of the submissions of the domestic industry that its performance was adversely affected during 2001-02 due to various factors including alleged dumping from China PR.

37. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices

having a bearing on the state of the industry as Production, Capacity Utilisation, Sales Quantum, Stock, Profitability, Net Sales Realisation, the Magnitude and Margin of Dumping etc in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra.

Sales Volume, Sales turnover and market share of domestic industry

38. It is noted from below that the sales volumes of the domestic industry has increased consistently and has grown by 20% during the injury period. However, it is noted that sales turnover during the same period has not kept pace with the increase in volumes and it has declined marginally during the POI as compared to last 2 years. The above analysis suggests that domestic industry's prices have declined during the same period because of price depression.

39. With regards to the market share of the domestic industry in the total demand, it is noted that the domestic industry's share has declined only marginally during the injury period while share of subject country has increased significantly.

| | UNIT | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|-----------------------------------|------|----------|----------|----------|----------------|
| Sales | MT | 18146.32 | 18658.15 | 19430.49 | 21688.53 |
| Trend | | 100 | 103 | 107 | 120 |
| Demand | MT | 32624 | 37358 | 35305 | 39460 |
| Trend | | 100 | 115 | 108 | 121 |
| Market share of domestic industry | % | 55.62 | 49.94 | 55.04 | 54.96 |

Sales Turnover

40. Though the sales turnover increased by 25% during the POI as compared to the base year, it remained static after 2002-03 to the POI. The fact that sales volume increased significantly after 2002-03 to the POI without increase in the sales value points out deterioration in the sales turnover of the domestic industry. It may be mentioned that there is no change in the cost of production of the domestic industry. On the basis of foregoing, it is considered that domestic industry has suffered significant injury by not being able to increase its sales turnover in line with increase in sales volume.

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec,04 |
|---------------------------|----------|---------|---------|---------|---------------|
| Sales Value-Net of Excise | | | | | |
| Domestic-PUC | Rs. Lacs | **** | **** | **** | **** |
| Index | Indexed | 100 | 127 | 123 | 123 |
| Exports | Rs. Lacs | **** | **** | **** | **** |
| Index | | 100 | 102 | 169 | 159 |
| Total Sales | Rs. Lacs | **** | **** | **** | **** |
| Index | | 100 | 126 | 124 | 125 |

Profits and Cash Flow

41. It is noted from the data that profits of the domestic industry declined significantly. It has been claimed that in case the dumped imports from subject countries are not checked at this stage, this would lead to complete erosion of profits of the domestic industry. In fact, it is noted that the domestic industry suffered financial losses in all segments of deniers in the POI as is evident from the table below.

| | | | | | |
|------------------------|----------|--------|---------|---------|--------|
| Profit before Interest | Rs. Lacs | -96.65 | 7694.67 | 4390.10 | 594.85 |
| Interest | Rs. Lacs | 1419 | 980 | 729 | 638 |
| Profit after interest | Rs. Lacs | -1516 | 6714 | 3661 | -43 |
| Depreciation | Rs. Lacs | 714 | 733 | 933 | 831 |
| Cash Profit | Rs. Lacs | 801.93 | 7447.63 | 4594.47 | 787.95 |

| | | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec,04 |
|--------------------------|---------|---------|---------|---------|---------------|
| Profit before interest | Indexed | -100 | 7961 | 4542 | 615 |
| Profit after interest | Indexed | -100 | 443 | 242 | -3 |
| Capital Employed | Indexed | 100 | 91 | 98 | 126 |
| Return – before interest | Indexed | -100 | 8757 | 4637 | 489 |
| Return –after interest | Indexed | -100 | 487 | 247 | -2 |

| | | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec,04 |
|-------------|---------|---------|---------|---------|---------------|
| Cash profit | Indexed | -100 | 929 | 573 | 98 |

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|----------------------|---------|---------|---------|---------|----------------|
| Profit/Loss | | | | | |
| Less than 120 Denier | Indexed | -100 | 243 | 114 | -54 |
| 120 Denier | Indexed | -100 | 599 | 312 | 17 |
| 121 to 150 Denier | Indexed | -100 | 1234 | 812 | 189 |
| More than 150 Dnr. | Indexed | -100 | 528 | 433 | 178 |

42. Further, the profitability of the domestic industry has been continually declining and the domestic industry has now started facing financial losses towards the last quarter of the investigation period, as would be seen from the table below:-

| Cost Per KG | | 1 st Qtr. | 2 nd Qtr. | 3 rd Qtr. | 4 th Qtr. |
|---|---------|----------------------|----------------------|----------------------|----------------------|
| Indian Rayon | Indexed | 100 | 101 | 103 | 104 |
| Kesoram Rayon | Indexed | 100 | 100 | 101 | 102 |
| NRC Ltd. | Indexed | 100 | 100 | 101 | 102 |
| Total Domestic Industry | Indexed | 100 | 100 | 102 | 102 |
| Selling price (Net of Excise per KG) | | | | | |
| Indian Rayon | Indexed | 100 | 98 | 92 | 90 |
| Kesoram Rayon | Indexed | 100 | 98 | 94 | 92 |
| NRC Ltd. | Indexed | 100 | 97 | 94 | 91 |
| Total Domestic Industry | Indexed | 100 | 97 | 93 | 90 |
| Profit / (Loss) Per Kg | | | | | |
| Indian Rayon | Indexed | 100 | 72 | -9 | -50 |
| Kesoram Rayon | Indexed | 100 | -11 | -368 | -537 |
| NRC Ltd. | Indexed | 100 | 37 | -50 | -105 |
| Total Domestic Industry | Indexed | 100 | 58 | -37 | -88 |
| Quantity Sold | | | | | |
| Indian Rayon | Indexed | 100 | 89 | 113 | 135 |
| Kesoram Rayon | Indexed | 100 | 78 | 92 | 106 |
| NRC Ltd. | Indexed | 100 | 108 | 103 | 171 |
| Total Domestic Industry | Indexed | 100 | 93 | 105 | 140 |
| Profit / (Loss) | | | | | |
| Indian Rayon | Indexed | 100 | 64 | -10 | -67 |

| | | | | | |
|-------------------------|---------|-----|----|------|------|
| Kesoram Rayon | Indexed | 100 | -9 | -337 | -568 |
| NRC Ltd. | Indexed | 100 | 40 | -52 | -180 |
| Total Domestic Industry | Indexed | 100 | 54 | -38 | -123 |

43. With regards to the issue of increase in the production of the domestic like product during the injury period, it has been claimed that the applicants would have suffered still higher financial loss in the proposed POI, had they not posted an increase in the production volumes, but had reduced the prices to the present levels.

44.. Cash flow position of the domestic industry could not be segregated for the domestic like product as the domestic industry is a multi product company. However, cash profits of the domestic industry pertaining to the like product has been determined and it shows similar trend as of profits. The cash profits of the domestic industry have deteriorated, as would be seen from the table below.

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec,04 |
|-------------|---------|---------|---------|---------|---------------|
| Cash profit | Rs.Lacs | **** | **** | **** | **** |
| Index | | -100.00 | 928.71 | 572.92 | 98.26 |

45. It has been argued that the domestic industry (Indian rayon in particular) was making high level of profits in 2002-03 and that is the reason for decline in the prices subsequently. For this reason, the Authority has examined the data pertaining to profits of the product (albeit, VFY as a whole) of Indian Rayon over the much longer period (from 1995-96) and it was found that the earlier profits of the company were in fact higher than the profits in 2002-03. It could not therefore be considered that the industry had higher prices in 2002-03.

| Company wise Profitability on PUC | | | | | |
|-----------------------------------|---------|---------|---------|---------|---------------|
| PBT | | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec,04 |
| Indian Rayon | Indexed | -100 | 346 | 187 | 31 |
| Kesoram Rayon | Indexed | -100 | 794 | 420 | -123 |

| | | | | | |
|-------------------------|---------|------|-----|-----|-----|
| NRC Ltd. | Indexed | -100 | 575 | 331 | -52 |
| Total Domestic Industry | Indexed | -100 | 443 | 241 | -3 |

Factors affecting domestic prices:

46. The imports from subject countries are resulting in price undercutting and price underselling in the Indian market. The landed price of imports from China PR as a whole is significantly below the non injurious price of the domestic industry. Selling prices of the domestic industry has declined as may be seen from the trends of the selling prices of the domestic industries. The trend is much more marked when deniers wise and grade wise price trends are examined. There has not been much change in the cost structure of the domestic industry during the injury period. Landed price from subject countries including applicable customs duty is below the sales realization and non injurious price of the domestic industry.

Actual and potential decline in production, capacity and capacity utilization

47. It has been submitted that plant utilization of the domestic industry remained at optimum levels due to dedicated efforts to be in the market and produce more and more. The production of the domestic like products shows a marginal positive trend when compared to the base year but it is noted that from 2002-03 to the POI, the production of the domestic industry has been stagnant despite the fact that additional capacity existed and demand also grew significantly during the same period. With regards to the capacity utilisation, it is noted that though the plant capacity utilisation has been significantly high, the capacity utilisation of the domestic industry with regards to the subject goods has been sub optimal. Moreover, it is noted the domestic industry has not been able to increase its sales proportionate to increase in production, in spite of reduction in selling prices.

| | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan'04-Dec'04 |
|-----------------------------|---------|---------|---------|---------------|
| Capacity | 37500 | 37500 | 37500 | 37500 |
| Production of subject goods | 17793 | 21038 | 21907 | 21464 |
| Production of all goods | 29479 | 33898 | 36056 | 36451 |

| | | | | |
|--------------------------------------|----|----|----|------|
| Year by year change(%) | | 15 | 6 | 1.09 |
| Capacity Utilization – Subject goods | 47 | 56 | 58 | 58 |
| Plant Utilization | 79 | 90 | 96 | 97 |

Productivity

48. It is noted that the productivity of the domestic industry increased significantly during the POI. Per employee productivity of the domestic industry shows positive trend due to increase in production and a significant decline in the number of employees. It is thus concluded that the domestic industry has not suffered injury on account of this parameter. However, It is noted that in spite of increase in productivity, profitability of the domestic industry declined over the injury period.

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|---------------------------|------|---------|---------|---------|----------------|
| Employee | Nos. | 9716 | 9112 | 9288 | 8298 |
| Productivity per day | MT | 59.31 | 70.13 | 73.02 | 71.55 |
| Productivity per Employee | MT | 1.83 | 2.31 | 2.36 | 2.58 |

Return on investments and Capital employed

49. It is seen that the domestic industry's return on capital employed became positive during the 2002-03 but has been severely deteriorated thereafter.

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|-----------------------------------|---------|---------|---------|---------|----------------|
| Gross Fixed Assets (VFY division) | Indexed | 100 | 101 | 105 | 116 |

| | | | | | |
|------------------------------------|---------|------|------|------|-----|
| Nat Fixed assets(VFY division) | Indexed | 100 | 100 | 99 | 113 |
| Working Capital(VFY division) | Indexed | 100 | 107 | 168 | 200 |
| Capital Employed (VFY division) | Indexed | 100 | 102 | 112 | 130 |
| Capital Employed Per KG | Indexed | 100 | 88 | 91 | 105 |
| Capital Employed on Domestic sales | Indexed | 100 | 91 | 98 | 126 |
| Profit on Capital Employed | Indexed | -100 | 487 | 247 | -2 |
| Return on Capital Employed | Indexed | -100 | 8757 | 4637 | 489 |

Employment and Wages

50. There is a sharp decline in the employment level of the domestic industry. In fact, the decline has been significant during the POI as compared to the previous year. Wages of the domestic industry show a normal increase during the injury period.

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec,04 |
|----------------------------|---------|----------|----------|----------|---------------|
| Employment | Nos | 9832 | 9220 | 9360 | 8298 |
| Wages | Rs.Lacs | 10060.71 | 12025.53 | 11777.67 | 12503.12 |
| Employment – Indexed | | 100.00 | 93.78 | 95.20 | 84.40 |
| Wages – Indexed | | 100.00 | 119.53 | 117.07 | 124.28 |
| Wages as a % of Total Cost | % | 19.93 | 20.96 | 19.20 | 20.13 |

Inventories

51. The Authority finds that average stock of finished goods with the domestic industry increased over the period involved. The stock as a percentage of the production and stock sufficient for number of days sales have also increased significantly. It is thus evident that the domestic industry has not been able to sell the increased production in market, resulting in piling up of inventories. This is in spite of the reduction in prices by the domestic industry

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|--|------|----------|----------|----------|----------------|
| Opening Stock | MT | 1288.64 | 392.36 | 2269.99 | 3562.03 |
| Closing Stock | MT | 392.36 | 2269.99 | 3714.85 | 2391.56 |
| Production of the domestic industry | MT | 17793.00 | 21038.00 | 21907.22 | 21464.85 |
| Avg. Stocks | MT | 840.50 | 1331.18 | 2992.42 | 2976.79 |
| Per Day Sales | MT | 49.72 | 51.12 | 53.23 | 59.42 |
| Stock sufficient for No. of days sales | Days | 16.91 | 26.04 | 56.21 | 50.10 |
| Stock as % of production | % | 4.72 | 6.33 | 13.66 | 13.87 |

Ability to raise capital investments

52. After examining the records, it is noted that no specific instance of deterioration in ability to raise capital investments have been found by the Authority. Hence, the authority does not conclude injury to the domestic industry on account of this parameter.

Growth

53. As shown in the table below, the domestic industry has faced negative growth in many parameters. Though, there is positive growth in sales volumes, production, demand, growth in sales values has been flat or marginally negative. Positive growth in sales volumes and production in spite of negative to static growth in sales values points out a significant reduction in the selling prices by the domestic industry. Moreover, the reduction in the selling prices has had very adverse impact on the profits, cash flow and ROI of the domestic industry.

| Particulars | Unit | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | Jan to Dec, 04 |
|----------------------------------|------|---------|---------|---------|----------------|
| Growth Compared to Previous Year | | | | | |
| Production | % | | 18.24 | 4.13 | -2.02 |
| Sales Volume Domestic | % | | 2.82 | 4.14 | 11.62 |
| Sales Value Domestic | % | | 27.26 | -3.51 | 0.50 |
| Profit on Subject goods | % | | 542.92 | -45.48 | -101.18 |

| | | | | | |
|------------------------------|---|--|---------|--------|--------|
| Cash Profit on domestic sale | % | | 1028.71 | -38.31 | -82.85 |
| Return on Capital Employed | % | | 57.63 | -26.81 | -26.98 |
| No. of Employee | % | | -6.22 | 1.52 | -11.35 |
| Wages per KG | % | | 3.95 | -7.92 | 5.01 |
| Average Selling Price/KG | % | | 23.77 | -8.06 | -9.26 |
| NSR-PUC-Price/KG | % | | 24.00 | -9.09 | -9.41 |

H. THREAT OF MATERIAL INJURY

54. The Authority has examined the threat of material injury to the domestic industry in addition to the material injury on the domestic industry.

Annexure II to the Rules provides as under in this regard.

"A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances which would create a situation in which the dumping would cause injury must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the Designated Authority shall consider, inter-alia, such factors and;

- (a) a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;*
- (b) sufficient freely disposable or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;*
- (c) whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and,*
- (d) Inventories of the article being investigated.*

55. In the instant case, It is considered that

(a) There is significant and rapid increase in the import volumes from subject country in absolute term. This increase is considered very significant in spite of efforts of the domestic industry to sell their material at lower prices. It has been claimed by the domestic industry that the increase would have been more, had the domestic industry not made efforts to curtail the same by offering matching prices or not effecting legitimate price increases (at the cost of financial losses).

(b) The potential increase in imports from the subject country remains significant given the fact that consumption of the subject goods in subject country remains limited as compared to the production capacity.

© Though the price undercutting is not very significant with regards to dumped imports from subject country, the same could be because of the fact that the domestic industries prices are depressed. Further, it is noted that at any point of time there is a positive price difference between the domestic product and imported Chinese product. Given nature of the product involved, any price difference between the domestic product and imported product may not be acceptable to the consumers and the domestic industry might be again under constant pressure for price reductions;

(d) The capacities created by the producers in the subject countries appear to be far more than their respective domestic demand. In this regard, it is noted from the evidence placed before the Authority that Capacity for production of subject goods in China is more than 200000 MT, which is not only highest in the world but also significantly in excess of the demand in China which can be seen from the table below.

| Year | 2001 | 2002 | 2003 | 2004 |
|---------------------|--------|--------|--------|--------|
| Production(MT) | 125389 | 145042 | 184639 | 200393 |
| Domestic Sales (MT) | 109416 | 115618 | 131477 | 157159 |
| Exports (MT) | 23692 | 394412 | 46579 | 40466 |

Source: - CCFEI.com

In fact, it has been claimed that due to excess capacity in China, producers have been directed to reduce the prices. One such website states as under:

"On Nov.25, Viscose Filament Industry Meeting was held in Beijing by Viscose Committee of China Chemical Fiber Association. The CEOs from viscose filament enterprises made strict regulations on production cutback tougher with the implementing measures. The production cutback amounts to 20kt by H1 of 2005 and to 35kt for the whole year. They also came to the same understanding that the price supervising mechanism be reinforced, with reward and punishment measures being demarcated clearly and linked with production cutback rate."

56. It is evident from the above that: -

- (a) Capacity created by producers in China is more than demand.
- (b) Chinese producers are under pressure to restrict the production, which would lead to higher fixed costs.

In view of the above, it is noted that producers are under severe pressure in subject country to export more and more so as to keep their cost of production at lower level.

- (e) While inventories of the article with the domestic industry are showing significant increase in spite of significant reduction in the selling prices by the domestic industry, applicants have claimed that that the producers in China are saddled with higher inventories.

Conclusions

57. There has been significant increase in the volume of dumped imports from subject country at the absolute level and also in relation to total imports and also in relation to total demand of subject goods into India. These dumped imports had significant adverse price effect resulting into price depression of the domestic industry. Further these dumped imports undercut the domestic industry selling prices during the POI. The margin of price undercutting was not very significant as the domestic selling prices were already depressed. Even though the domestic industry posted higher sales volume and production, the growth of the domestic industry was negative in terms of sales value, profits, ROI and cash flow. Additionally, inventories with the domestic industry increased significantly during the injury period. Further, the sales turnover remained static through much of injury period despite the fact that

demand and sales volume increased significantly during the same period signifying the lower sales realisations of the domestic industry. This contributed to decline in profitability of the domestic industry. It is also noted that profitability declined to such an extent that domestic industry suffered financial losses during the POI. The steep decline in profitability resulting into losses could be discerned through quarter by quarter analysis for the POI. The dumped imports from subject country has further resulted into deterioration in the return on investment (ROI) of the domestic industry and cash profit. Significantly, the domestic industry has suffered loss of employment during the injury period. The performance of the domestic industry did improve in terms of production, sales, capacity Utilization and productivity Per Employee. However, this can not be considered satisfactory, given the fact that large number of parameters are showing significant adverse trends during the injury period which have culminated into the domestic industry suffering financial losses during the POI. With regards to the parameters analysed in connection with threat of material injury, it is noted that many parameters as per Annexure II of the rules show positive developments with regards to threat of material injury to the domestic industry. On the basis of the above analysis, it is concluded that the domestic industry has suffered material injury during the POI and is suffering threat of material injury also. Subsequent to the disclosure, a number of interested parties have claimed that the domestic industry has not suffered material injury. These arguments are based primarily on the fact that the performance of the domestic industry shows improvement if the injury parameters are compared between base year and investigation period. The Authority after examining the submissions of the interested parties considers that it would not be appropriate to compare the base year only with the investigation period. Such an approach would render information for the intervening periods redundant. Further, should the information for the intervening periods be considered, it would be seen that the performance of the domestic industry markedly improved after base year. However, the performance once again deteriorated after 2002-03. Further, as stated in the disclosure statement, the domestic industry was suffering injury for a variety of reasons in 2001-02. It is for this added reason that it would not be appropriate to compare performance of the domestic industry only between 2001-02 and investigation period. In fact, if the base year is ignored for the reason that the domestic industry has suffered injury due to a number of factors, it would be seen that the performance of the domestic industry deteriorated marked after 2002-03. Therefore, as a matter of consistent practice, the authority has taken the trends during the entire injury period and not the base year and POI only

into account while concluding material injury to the domestic industry.

I. Causal link

(a) Introduction

58. In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by the domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement of Anti Dumping and as per para (v) of Annexure II under Rule 11 under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in that industry. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry, were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

(a) Effect of dumped imports

59. There has been significant increase in the volume of dumped imports from subject countries at the absolute level and also in relation to total imports and also in relation to total demand of subject goods into India. These dumped imports had significant adverse price effect on account of dumped imports resulting into price depression of the domestic industry. Further these dumped imports undercut the domestic industry selling prices during the POI. The margin of price undercutting was not very significant as the domestic selling prices were already depressed. Though, the domestic industry has suffered a marginal decline in market share on account of dumped imports from subject country, dumped imports from subject country has resulted in negative growth of the domestic industry in terms of sales value, profits, ROI and cash flow. Further, it is noted that dumped imports from subject country increased during the second half of 2002-03, when the domestic industry increased its prices. It is also noted that these Imports declined thereafter when the domestic industry reduced the prices. The trend of declining imports is found within the investigation period also when domestic industry reduced the prices throughout the investigation period. This establishes the fact that that whenever the domestic industry increased the prices, the imports have shown an increase and whenever the domestic industry reduced the prices, dumped imports from subject country have declined. More over, it is also seen that whenever the domestic

industry increased prices, its profitability increased though its inventory also increased in the same proportion and its market share went down. However, whenever the domestic industry reduced its prices, its profitability deteriorated. The decline in profitability was to such an extent that the domestic industry suffered financial losses in the investigation period. The deterioration in the financial parameters is evident when examined on quarter-by-quarter basis. Therefore, decline in profitability of the domestic industry after improvement in 2002-03 appears to be due to dumped imports from subject country.

Effect of Other factors

(a) Performance of Other Domestic producers:

60. There was one other domestic producer of the subject goods during the period under investigation apart from the applicants. Though they have not submitted the information in the form and manner of exporter's questionnaire, it could be concluded from the examination of limited information made available before the Authority that they have been adversely impacted during the POI and their operating performance has gone down.

(b) Contraction of demand and Changes in the pattern of consumption

61. The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change, nor there is any quantified allegation in this regard. The Authority notes that there are alternate competing products. However, the product under consideration and these alternate competing products have co-existed for quite long. As the demand of the subject goods have gone up significantly during the injury period and it may be concluded that alternate products may not have contributed to injury to the domestic industry.

© Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

62. The Authority has examined imports from various sources that include information from DGCI&S, secondary sources; Customs port data from JNPT and other customs houses, and exporters response

data. It is seen that volume of imports from other subject countries individually including Ukraine is negligible and therefore, the Authority has terminated investigations against Ukraine on the grounds that the imports from Ukraine are negligible. In any event, it is noted that imports from other countries have not shown any consistent pattern of increase, and does not appear to be adversely affecting the prices in the Indian market and can at best be called sporadic imports.

(d) Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

63 The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from the subject countries compete directly with the subject goods produced by the domestic industry. The authority further notes that the imported product is sold to meet the similar commercial grades and specification as domestically produced subject goods. It is further noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses.

(e) Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry

64. It has been argued that the domestic industry has obsolete technology. The Authority after examining the documents and verification of the exporters plant is of the view that there are only two technologies for production of the subject goods, namely PSY and CSY. It is found that producers in China as well as in India have both the technologies. Therefore, it is not true that the domestic industry has obsolete technology. On the basis of the examination of the records of the applicants, the authority holds that developments in technology, has not been a relevant factor for the injury to the domestic industry.

65. With regard to the export performance of the domestic industry, the authority notes that though there has been improvement in the exports of the domestic industry during the period under consideration, it still forms a not so significant part of the total sales of the domestic industry. It is further noted that the various performance with respect to various economic indicators have been determined with respect to domestic sales only.

66. As regards improvement in productivity, it is noted that the Productivity of the domestic industry has increased as a result of increase in production. On the basis of the examination, the authority holds that the productivity per se is not the cause for the injury to the domestic industry.

(f) Conclusion on causation

67. Significant increase in volume of imports between 2001-02 and POI led to increase in share of imports in demand/consumption. Market share of the dumped imports gradually increased over the injury period. Though the market share of the domestic industry declined marginally during the same period, dumped imports from the subject countries undercut the prices of the domestic industry. As illustrated in the earlier paragraphs, because of dumped imports from subject country, the domestic industry was prevented from selling the product at a price, which would have enabled it to recover its cost of production and earn a reasonable profit. This led to deterioration in the performance of the domestic industry in terms of profits, cash profits and return on investment. Total wages and wages per unit of production also increased during the POI. But such increases are not up to the level, which can create any direct impact on profitability of the domestic industry. Subsequent to the disclosure statement, a number of interested parties have argued that injury to the domestic industry has been caused due to other factors. The Authority notes in this regard that the Rules require the Authority to examine any factor brought to the knowledge of the Authority, which could have at the same time caused injury to the domestic industry. No such specific factor other than those examined in the earlier paragraphs, which could have caused injury to the domestic industry, have been, however, brought to the knowledge of the Designated Authority.

68. Given the above analysis, which has properly distinguished and separated the effects of all known factors on the situation of the domestic industry from the injurious effects of the dumped imports, it is concluded that these other factors as such did not reverse the fact that the material injury found may be attributed to the dumped imports.

69. It is, therefore, concluded that the dumped imports originating in the subject country has caused material injury to the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti Dumping rules and article 3.5 of the Agreement of Anti Dumping.

J. Indian Industry interest.

70. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

71. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods.

72. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

K. CONCLUSIONS:

73. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- A. The subject goods as defined in para 7 have been exported to India from the China PR below its normal value.
- B. The Domestic Industry has suffered material injury and is facing threat of material injury;
- C. The injury has been caused by the dumped imports from China PR.
- D. The Anti dumping investigations are terminated with regards to Ukraine as per rule 14 of the Anti dumping rules as imports from that country have been found to be negligible within the meaning of the rules.

74. The Authority considers it necessary to impose an anti dumping duty on all imports of subject goods from subject country in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping and margin of injury determined by the Authority is indicated in the paragraphs 31 above. The Authority proposes to recommend the amount of anti dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is proposed to be compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation.

75. Accordingly, the Authority recommends that the definitive anti dumping duties be imposed by the Central Government on all imports of subject goods from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government falling within Custom Heading 5403 originating in or exported from Peoples Republic of China. The Anti-Dumping duty shall be the difference between the amount mentioned in column 9 of the following table and the landed value of imports per Kg on imports of subject goods falling within Chapter 54 of the Customs Tariff, originating in or exported from the countries mentioned below: -

| S. No. | Heading | Description of goods | Specification | Country of origin | Country of Export | Producer | Exporter | Reference price | Unit of measurement | Currency |
|--------|---------|------------------------|---------------|-------------------|-------------------|------------------------|----------|-----------------|---------------------|-----------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) |
| 1. | 5403 | Viscose Filament Yarn* | Any | Any | China PR | M/s Yibin Grace Co Ltd | Any | 3.91 | Kg | US Dollar |
| 2. | 5403 | do | Any | Any | China PR | M/s Yibin Heist Co Ltd | Any | 4.04 | Kg | US Dollar |

| | | | | | | | | | | |
|----|------|----|-----|----------|---------------------|------------------------------------|-----|------|----|-----------|
| 3. | 5403 | do | Any | Any | China PR | M/s XinXiang Chemical fibre Co Ltd | Any | 4.82 | Kg | US Dollar |
| 4. | 5403 | do | Any | Any | China PR | Any except above | Any | 4.82 | Kg | US Dollar |
| 5. | 5403 | do | Any | China PR | Any except China PR | Any | Any | 4.82 | Kg | US Dollar |

*Viscose Rayon Filament Yarn up to 150 deniers (and \pm 4% permissible variation thereof) including mono filament yarn of less than 67 decitex also known as viscose filament yarn or VFY, Rayon Filament Yarn, Art Silk Yarn, Cellulose Yarn or Rayon Yarn and includes all yarns made of 100% viscose yarns such as dyed yarn, flat yarn, microfilament microyam, twisted yarn (excluding embroidered), doubled/ multiple ply yarn etc of VFY excluding embroidered yarn, sewing thread, fur yarn, fire retardant yarn, engineered yarn and air texturised yarn

76. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.32.

77. An appeal against this order shall lie before the Customs Excise and Service Tax Appellate tribunal, in accordance with the Act.

78. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measures, as recommended herein, from time to time, as per the relevant provisions of the Act, and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

CHRISTY L. FERNANDEZ. Addl. Secy. and Designated Authority